bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org संवत 2080 युगाब्द 5125 कुल पृष्ठ –32 जनवरी प्रथम – 13

वर्तमान

कमल ज्योति

संकल्प की सिद्धि

₹20

लोकसभा चुनाव-2024
योजना-बैठक

बैठक

हमारा संकल्प विकसित भारत
विकसित भारत
संकल्प यात्रा
(15 नवंबर, 2023 से 26 जनवरी, 2024)
एलपीजी
कनेक्शन
77%
55%

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो० श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

रामोत्सव अयोध्या धाम

मकर संक्रान्ति की हार्दिक शुभकामनाएं

सम्पादकीय

नया भारत रामराज्य की ओर!

श्री राम जन्मभूमि मंदिर रामराज्य के शाश्वत सिद्धांतों के साथ जोड़ने का एक बिन्दु है। 500 साल के अनवरत संघर्ष के बाद मन्दिर का पुर्ननिर्माण पूर्ण होने वाला है। कांग्रेस ने 22 जनवरी को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भाग लेने से इनकार कर दिया है। वोट के सौदागर कुछ दल इसका विरोध कर रहे हैं।

इसका अर्थ यही है कि प्रभु श्रीराम ने इस देश को इस दिशा में भी आंखें खोलने का एक अवसर दे दिया है कि कौन देश की संस्कृति के साथ है और कौन देश को एक उपनिवेश मानने की मानसिकता से पीड़ित है। यह धारणा अर्धसत्य है कि यह लोग वोट बैंक के प्रति निष्ठा दर्शाने के लिए राम विरोध करते हैं।

वास्तव में उनका मिशन भारत की सांस्कृतिक चेतना का अपमान करना है। मुस्लिम तुष्टीकरण और हिन्दुओं का मानमर्दन तो उनका स्वभाव है। यही कारण है कि कांग्रेस के प्रथम परिवार का कोई भी व्यक्ति 1947 से 2024 तक कभी भी रामलला दर्शन के लिए अयोध्या नहीं गया। आज प्राण प्रतिष्ठा के उपर वितंडावाद खड़ा कर रहा है।

प्रभु श्रीराम को काल्पनिक कहने वालों के लिए भी यह प्रश्न तो शेष ही रह जाता है कि वे हजारों वर्ष से किस प्रकार साक्षी हैं, साक्षात हैं। वे मात्र जीवंत और साक्षी ही नहीं हैं, बल्कि उनके नाम–मात्र ने राष्ट्र में नव–प्राणों का तब–तब संचार किया है, जब–जब इस राष्ट्र ने उन्हें पुकारा है।

गांधी जी ने स्पष्ट कहा था कि वे इस बात में पड़ना ही नहीं चाहते कि राम ऐतिहासिक हैं या नहीं। उनके लिए राम नाम ही उनकी शक्ति और उनकी प्रेरणा थी। उनका प्रिय भजन ''रघुपति राघव राजा राम'' था। राम नाम का जप करते थे। उनकी समाधि पर ''हे राम'' लिखा है वे ''राम राज्य'' की राजनैतिक व्यवस्था के प्रबल समर्थक थे।

श्री राम की 'कल्पना' क्या है, जिसका अस्तित्व कण कण में व्याप्त है, जिससे यह भारत भारत बना है? यह भी कि संविधान सभा ने, भारत के संविधान के प्रथम चित्र पृष्ठ पर, रामराज्य की ही कल्पना क्यों की? राम मंदिर का निर्माण मात्र एक मंदिर का निर्माण नहीं है, बल्कि आदर्श शासन के युग पुरूष मर्यादा पुरूषोत्तम राम की राम राज्य की प्रतिष्ठापना है। इस दृष्टि का लक्ष्य वह सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन स्थापित करना है, जो गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस में चित्रित आदर्शों और स्वराज के संदर्भ में महात्मा गांधी की 'रामराज्य' की व्याख्या में है। 'रामराज्य' में भौतिक कल्याण भी है, सामंजस्यपूर्ण और समावेशी भविष्य भी है, दैवीय चेतना भी है और नैतिक आचरण भी है।

सामाजिक समरसता, न्यायपूर्ण व्यवस्था, सर्वे भवन्तु सुखिनः का संकल्प है। विश्व का कल्याण हो, प्राणियों में सद्भावना हो का सद्प्रयास है। ऐसे राष्ट्र मन्दिर के उद्घाटन में विश्व के अनेकों देशों से लोग पधार रहे हैं चारों ओर जय जयकार हो रही है। आइये हम भी मिलकर सांस्कृतिक भारत की इस प्रतिष्ठा से अपने को जोड़ें।

जय सियाराम!

नये संकल्प, नित्य नूतन सिद्धियां : मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महात्मा मंदिर, गांधीनगर में 10वें वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट– 2024 का उद्घाटन किया। (शिखर सम्मेलन) का विषय 'गेटवे टू द फ्यूचर' है और इसमें 34 सहभागी देश और 16 भागीदार संगठन हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय द्वारा समिट का उपयोग पूर्वोत्तर क्षेत्रों में निवेश के अवसरों को प्रदर्शित करने के एक मंच के रूप में भी किया जा रहा है।

समिट को उद्योग जगत की कई हस्तियों ने संबोधित किया। आर्सेलरमित्तल के अध्यक्ष श्री लक्ष्मी मित्तल, सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन, जापान के अध्यक्ष श्री तोशिहिरो सुजुकी, रिलायंस समूह के श्री मुकेश अंबानी, अमेरिका के माइक्रोन टेक्नोलॉजीज के सीईओ श्री संजय मेहरोत्रा, अडानी समूह के अध्यक्ष गौतम अडानी, सिमटेक, दक्षिण कोरिया के सीईओ श्री जेफरी चुन, टाटा संस लिमिटेड के अध्यक्ष श्री एन चंद्रशेखरन, डीपी वर्ल्ड के अध्यक्ष श्री सुल्तान अहमद बिन सुलायेम, गुजरात ग्लोबल समिट को संबोधित किया। संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति और अबु धाबी के सुलतान महामहिम शेख मोहम्मद बिन जायद अल नहय़ान ने भी शिखर सम्मेलन को प्रारंभ में संबोधित किया।

प्रधानमंत्री ने उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए सबसे पहले 2024 के लिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं। उन्होंने 2047 तक भारत को 'विकसित' बनाने का संकल्प दोहराया, जिससे अगले 25 वर्ष देश के 'अमृत काल' बनेंगे। उन्होंने कहा– "यह नए सपनों, नए संकल्पों और निरंतर उपलब्धियों का समय है।" उन्होंने 'अमृत काल' के पहले वाइब्रेंट गुजरात समिट के महत्व का उल्लेख किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि वाइब्रेंट गुजरात वैश्विक शिखर सम्मेलन में संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति और अबू धाबी के सुलतान महामहिम शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान की मुख्य अतिथि के रूप में भागीदारी विशेष है क्योंकि यह भारत और

एनवीडिया के सीनियर वीपी श्री शंकर त्रिवेदी तथा ज़ेरोधा के संस्थापक और सीईओ निखिल कामत ने सभा को संबोधित किया और अपनी व्यावसायिक योजनाओं के बारे में जानकारी दी। बिजनेस नेताओं ने प्रधानमंत्री के विजन की प्रशंसा की।

बैठक में जापान के अंतर्राष्ट्रीय मामलों के उपमंत्री श्री शिन होसाका, सऊदी अरब के सहायक निवेश मंत्री श्री इब्राहिम यूसेफ अल मुबारक, मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका, दक्षिण एशिया, राष्ट्रमंडल और संयुक्त राष्ट्र तथा ब्रिटेन के राज्य मंत्री श्री तारिक अहमद, अर्मेनिया के अर्थव्यवस्था मंत्री श्री वैहन केरोबियान, आर्थिक कार्य और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री टिट रिसालो, मोरक्को के उद्योग और वाणिज्य मंत्री श्री रयाद मेजोर, नेपाल के वित्त मंत्री श्री प्रकाश शरण महत, वियतनाम के उप प्रधानमंत्री श्री त्रान लुउ क्वांग, चेक गणराज्य के प्रधानमंत्री श्री पेट्र फियाला, और मोजाम्बिक के राष्ट्रपति श्री फिलिप न्यूसी, तिमोर लेस्ते के राष्ट्रपति श्री जोस रामोस–होर्ता ने भी वाइब्रेंस संयुक्त अरब अमीरात के बीच गहरे होते संबंधों को दिखाता है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने वाइब्रेंट गुजरात वैश्विक शिखर सम्मेलन के आर्थिक विकास और निवेश से जुड़ा संवाद का वैश्विक मंच बनने का जिक्र करते हुए कहा कि भारत के प्रति उनके विचार और समर्थन गर्मजोशी और दिल से भरे हुए हैं। उन्होंने नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र, नवाचारी स्वास्थ्य सेवा और भारत के बंदरगाह अवसंरचना में कई बिलियन डॉलर के निवेश को समर्थन बढ़ाने में भारत–यूएई साझेदारी पर प्रकाश डाला। उन्होंने गिफ्ट सिटी में यूएई के सॉवरेन वेल्थ फंड द्वारा संचालन शुरू करने और ट्रांसवर्ल्ड कंपनियों द्वारा विमान और जहाज पट्टे पर दिये जाने की गतिविधियों का भी उल्लेख किया। प्रधानमंत्री ने भारत और संयुक्त अरब अमारात के बीच बढ़ती साझेदारी का श्रेय महामहिम शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान को दिया।

प्रधानमंत्री ने मोजाम्बिक के राष्ट्रपति और आईआईएम

अहमदाबाद के पूर्व छात्र श्री फिलिप न्यूसी की गरिमामय उपस्थिति का उल्लेख करते हुए भारत की अध्यक्षता में अफ्रीकी संघ को जी–20 की स्थायी सदस्यता मिलने पर गर्व व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति न्यूसी की उपस्थिति ने भारत–मोजाम्बिक के साथ–साथ भारत–अफ्रीका संबंधों को प्रगाढ़ बनाया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि चेक गणराज्य के प्रधानमंत्री श्री पेट्र फियाला की अपने देश के प्रधानमंत्री के रूप में पहली यात्रा भारत और वाइब्रेंट गुजरात के साथ चेक गणराज्य के पुराने संबंधों को दर्शाती है। प्रधानमंत्री मोदी ने ऑटोमोबाइल, प्रौद्योगिकी और मैन्युफेक्चरिंग क्षेत्रों में सहयोग का उल्लेख किया।

प्रधानमंत्री ने नोबेल पुरस्कार विजेता और तिमोर लेस्ते के राष्ट्रपति श्री जोस रामोस–होर्ता का भी स्वागत किया और अपने देश के स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत के उपयोग पर प्रकाश डाला।

प्रधानमंत्री ने वाइब्रेंट गुजरात शिखर सम्मेलन की 20वीं वर्षगांठ का उल्लेख करते हुए कहा कि समिट ने नए विचारों को दिखाया है और निवेश तथा रिटर्न के लिए नए प्रवेश द्वार बनाए हैं। प्रधानमंत्री ने इस वर्ष की थीम 'गेटवे टू द फ्यूचर' पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 21वीं सदी का भविष्य साझा प्रयासों से उज्ज्वल होगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत की जी–20 की अध्यक्षता के दौरान भविष्य के लिए एक रोड मैप प्रस्तुत किया गया है और इसे वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट के विजन से आगे बढ़ाया जा रहा है। उन्होंने 'एक विश्व, एक परिवार, एक भविष्य' के विजन के साथ आई2यू2 तथा अन्य बहुपक्षीय संगठनों के साथ साझेदारी को मजबूत बनाने का भी उल्लेख किया, जो अब वैश्विक कल्याण के लिए पहली शर्त बन गई है।

भारत के प्रत्येक कोने में निवेशकों के लिए न संभावनाएं हैं और वाइब्रेंट गुजरात वाइब्रेंट गुजरात समिट इसके लिए एक प्रवेशद्वार की तरह है, भविष्य के लिए एक प्रवेश द्वार है।

प्रधानमंत्री ने कहा– "तेजी से बदलती दुनिया में भारत 'विश्व मित्र' की भूमिका में आगे बढ़ रहा है। आज भारत ने विश्व को साझा सामूहिक लक्ष्यों को पाने का विश्वास दिलाया है। वैश्विक कल्याण के लिए भारत की प्रतिबद्धता, प्रयास और कठोर परिश्रम विश्व को सुरक्षित और समृद्ध बना रहे हैं। विश्व भारत को स्थायित्व के महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में देखता है। एक ऐसा मित्र जिस पर भरोसा किया जा सकता है, एक सहयोगी जो जन–केंद्रित विकास में विश्वास करता है, एक स्वर जो वैश्विक कल्याण में विश्वास करता है, वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकास का एक इंजन है, समाधान खोजने के लिए एक प्रौद्योगिकी केंद्र है, प्रतिभाशाली युवाओं का एक पावरहाउस है और एक लोकतंत्र है जो काम करता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत के 1.4 बिलियन नागरिकों की प्राथमिकताएं और आकांक्षाएं तथा समावेशिता और समानता के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता के साथ मानव केंद्रित विकास में उनका विश्वास विश्व समृद्धि और विकास का एक प्रमुख पहलू है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज भारत विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, जबकि यह 10 साल पहले 11वें स्थान पर पिछड़ा था। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि अगले कुछ वर्षों में भारत विश्व की शीर्ष 3 अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन जाएगा, जैसा कि दुनिया की विभिन्न रेटिंग एजेंसियों द्वारा अनुमान व्यक्त किए गए हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा दृ "विशेषज्ञ इसका विश्लेषण कर सकते हैं, लेकिन मैं गारंटी देता हूं कि भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।" उन्होंने कहा कि भारत ऐसे समय में विश्व के लिए आशा की किरण बन गया है जब विश्व ने कई भू–राजनीतिक अस्थिरता देखी है। प्रधानमंत्री ने वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट में भारत की प्राथमिकताओं को प्रतिबिंबित होने की बात करते हुए टिकाऊ उद्योगों, मैन्युफैक्चरिंग और अवसंरचना, नए युग के कौशल, भविष्य की प्रौद्योगिकियों, एआई और नवाचार, ग्रीन हाइड्रोजन, नवीकरणीय ऊर्जा और सेमीकंडक्टरों का उल्लेख किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने सभी से विशेष रूप से स्कूल और कॉलेज के छात्रों से गुजरात में ट्रेड शो देखने का आग्रह किया। प्रधानमंत्री ने कल महामहिम न्यूसी और महामहिम रामोस होर्ता के साथ इस ट्रेड शो में समय बिताने के बारे में कहा कि ट्रेड शो में ई–मोबिलिटी, स्टार्ट–अप, ब्लू इकोनॉमी, ग्रीन एनर्जी और स्मार्ट इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे क्षेत्रों में विश्व स्तरीय अत्याधुनिक तकनीक के साथ बनाए गए उत्पादों का प्रदर्शन किया गया है। उन्होंने कहा कि इन सभी क्षेत्रों में निवेश के लिए लगातार नए अवसर पैदा हो रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने भारतीय अर्थव्यवस्था के लचीलेपन और गति के आधार के रूप में अवसंरचना सुधारों पर सरकार के फोकस के बारे में विस्तार से बताया कि इन सुधारों से अर्थव्यवस्था की क्षमता, सामर्थ्य और प्रतिस्पर्धा बढ़ी है। उन्होंने कहा कि पुनर्पूंजीकरण और आईबीसी ने एक मजबूत बैंकिंग प्रणाली को जन्म दिया है, लगभग 40 हजार अनुपालनों को समाप्त करने से व्यापार में सहजता है, जीएसटी ने कराधान की भूलभुलैया को दूर किया है, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के विविधीकरण के लिए बेहतर वातावरण है, हाल ही में 3 एफटीए पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जिसमें एक संयुक्त अरब अमीरात के साथ है। कई क्षेत्रों को ऑटोमैटिक एफडीआई के लिए खोलना, अवसंरचना में रिकॉर्ड निवेश और पूंजीगत व्यय में 5 गुना वृद्धि। उन्होंने ऊर्जा के हरित और वैकल्पिक स्रोतों में अभूतपूर्व प्रगति, नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में 3 गुना वृद्धि, सौर ऊर्जा क्षमता में 20 गुना वृद्धि, किफायती डेटा कीमतों से डिजिटल समावेशन,

प्रत्येक गांव में ऑप्टिकल फाइबर, 5 जी की शुरुआत, 1.15 लाख पंजीकृत स्टार्टअप के साथ तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इको–सिस्टम का भी उल्लेख किया। उन्होंने निर्यात में रिकॉर्ड वृद्धि का भी जिक्र किया।

प्रधानमंत्री मोदी ने दोहराया कि भारत में हो रहे परिवर्तन जीवन की आसानी में सुधार कर रहे हैं और उन्हें सशक्त बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि पिछले 5 वर्षों में, 13.5 करोड़ से अधिक लोग गरीबी से बाहर आए हैं, जबकि मध्यम वर्ग की औसत आय लगातार बढ़ रही है। उन्होंने महिला कार्यबल की भागीदारी में रिकॉर्ड वृद्धि का भी उल्लेख किया जो भारत के भविष्य के लिए एक बड़ा संकेत है। प्रधानमंत्री ने कहा– "इसी भावना के साथ मैं आप सभी से भारत की निवेश यात्रा का हिस्सा बनने की अपील करता हूं।"

प्रधानमंत्री ने लॉजिस्टिक्स और परिवहन क्षेत्र में आधुनिक नीतिगत सुधारों का जिक्र करते हुए एक दशक के भीतर हवाई अड्डों की संख्या 74 से बढ़ाकर 149 करने, भारत के राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क को दोगुना करने, मेट्रो नेटवर्क को तिगुना करने, समर्पित माल ढुलाई गलियारों, राष्ट्रीय जलमार्गों, बंदरगाहों के टर्न–अराउंड समय में वृद्धि तथा जी–20 के दौरान घोषित भारत–मध्य पूर्व–यूरोप आर्थिक गलियारे पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा– "यह आप सभी के लिए निवेश के बड़े अवसर हैं।"

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन का समापन करते हुए कहा कि भारत के प्रत्येक कोने में निवेशकों के लिए नई संभावनाएं हैं और वाइब्रेंट गुजरात वाइब्रेंट गुजरात समिट इसके लिए एक प्रवेशद्वार की तरह है, भविष्य के लिए एक प्रवेश द्वार है। उन्होंने कहा– "आप न केवल भारत में निवेश कर रहे हैं, बल्कि युवा सृजनकारों और उपभोक्ताओं की एक नई पीढ़ी को भी आकार दे रहे हैं। भारत की महत्वाकांक्षी युवा पीढ़ी के साथ आपकी साझेदारी ऐसे परिणाम ला सकती है जिसकी आपने कल्पना भी नहीं की हो।

इस अवसर पर संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति और अबू धाबी के सुलतान महामहिम शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान, मोजाम्बिक के राष्ट्रपति श्री फिलिप न्यूसी, तिमोर लेस्ते के राष्ट्रपति श्री जोस रामोस–होर्ता, चेक गणराज्य के प्रधानमंत्री श्री पेट्र फियाला, वियतनाम के उप प्रधानमंत्री श्री ट्रान लुउ क्वांग, गुजरात के राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

पृष्ठभूमि

वर्ष 2003 में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट की परिकल्पना की गई थी। अब यह समावेशी विकास और सतत विकास के लिए व्यापार सहयोग, ज्ञान साझाकरण तथा रणनीतिक साझेदारी के लिए सबसे प्रतिष्ठित वैश्विक मंचों में से एक के रूप में विकसित हो गया है। गुजरात के गांधीनगर में 10 से 12 जनवरी, 2024 तक आयोजित होने वाला 10वां वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 'गेटवे टू द फ्यूचर' थीम के साथ "वाइब्रेंट गुजरात के 20 वर्षों की सफलता का उत्सव है।" इस वर्ष के समिट के लिए 34 सहयोगी देश और 16 भागीदार संगठन हैं। इसके अतिरिक्त पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय पूर्वोत्तर क्षेत्रों में निवेश के अवसरों को प्रदर्शित करने के लिए वाइब्रेंट गुजरात मंच का उपयोग करेगा।

वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट उद्योग 4.0, प्रौद्योगिकी और नवाचार, स्थायी मैन्युफैक्चरिंग, ग्रीन हाइड्रोजन, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और नवीकरणीय ऊर्जा तथा स्थिरता की दिशा में संक्रमण जैसे विश्वस्तरीय प्रासंगिक विषयों पर सेमिनार और सम्मेलनों सहित विभिन्न कार्यक्रमों की मेजबानी करेगा।

सामाजिक समरसता के प्रतीक राम

युवाओं के लिए मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम से बढ़कर कोई आदर्श नहीं हो सकता। राम ने अपने जीवन का स्वर्णिम समय 'तरूणाई' को राष्ट्र के काम में लगाया। राम का सारा जीवन प्रेरणाओं से भरा है। राम की राज महल से जंगल तक की यात्रा को देखें तो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वह अविचल रहे। उन्होंने समाज में सब प्रकार का आदर्श स्थापित किया। आदर्श भाई, आदर्श मित्र, आज्ञाकारी पुत्र, आज्ञाकारी शिष्य, आदर्श पति, आदर्श पिता और आदर्श राजा का उदाहरण स्वयं के आचरण द्वारा प्रस्तुत किया। पूरी अयोध्या के युवा उनके सखा थे। वह कामादिदोष रहितं, कुशल संगठनकर्ता, लोक संग्रही, मितव्ययी व मृदुभाषी थे।

बाल्मीकि रामायण के अनुसार नारद जी ने महर्षि बाल्मीकि को राम के गुणों के बारे में बताते हुए कहा – **इक्ष्वाकुवंश प्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः। नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान द्युतिमान वशी।** नारद जी कहते हैं इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न राम मन को वश में रखने वाले, महाबलवान, कान्तिमान, धैर्यवान और जितेन्द्रिय हैं। वे बुद्धिमान, नीतिमान तथा वाग्मी यानि अच्छे वक्ता भी हैं। वे प्रतापवान, धर्मज्ञ, सत्यप्रतिज्ञ, प्रजाप्रतिपालक, अखिल शास्त्रों के तत्वज्ञ, वेदवेदांग के ज्ञाता, गंभीरता में समुद्र और धैर्य में हिमालय के समान हैं।

राम के जीवनकाल की शुरूआत संतों की सेवा के साथ हुई। अत्याचारी रावण के आतंक से जब समाज चीत्कार कर रहा था। ऋषि मुनि सताये जा रहे थे। अनुसंधान के प्रत्येक कार्य में जब राक्षस विध्न डालते और ऋषियों के यज्ञ विध्वंस किये जा रहे थे। रावण को चुनौती देने का साहस समाज नहीं जुटा पा रहा था। रावण का आतंक इतना बढ़ गया था कि ऋषिकृमुनियों की हड्डियों के पहाड़ लग गये थे। हड्डियों के लगे पहाड़ देखकर राम ने प्रतिज्ञा ली कि निश्चिचर हीन करहु महिं भुज उठाय प्रण कींन्ह। राम ने राक्षसों का संहार कर समाज को अभय प्रदान किया। राम का करीब 16 वर्ष की अवस्था में विवाह हुआ। 18 वर्ष की अवस्था में वनवास हुआ। इसके बाद कानन,कठिन भयंकर भारी, 14 वर्ष वन में रहे। जंगल,महल,सुख दुख,निन्दा प्रशंसा, यश अपयश आदि की चिंता नहीं की। जो मिला उसे ग्रहण किया जो कहा गया उसका पालन किया।

राम को युवराज बनाने की तैयारी हो रही है लेकिन अचानक उन्हें समाचार मिला कि वन जाना है। राम विद्रोह नहीं करते वन जाने को सहर्ष तैयार हो जाते हैं। चक्रवर्ती सम्राट के पुत्र होकर भी घोर अभावों के बीच वन में 14 वर्ष व्यतीत करते हैं। जंगल में वनवास के दौरान शूर्पणखा ने राम के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा। राम और लक्ष्मण दोनों शूर्पणखा का यह प्रस्ताव अस्वीकार कर देते हैं। राक्षस राज रावण पंचवटी से सीता का हरण कर लेता है। वनवासियों के बल पर लंका पर चढ़ाई की। राम सुग्रीव से मिताई करते हैं। वनवासियों को संगठित कर अत्याचारी रावण का संहार किया। राम ने रावण के मारने के बाद लंका पर अपना राज्य स्थापित नहीं किया। विभीषण को लंका का राजा बनाया। लक्ष्मण से राम कहते हैं 'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'। मातृभूमि के प्रति ऐसी उत्कट निष्ठा राम रखते हैं। राम के जीवन की इन सब घटनाओं से युवाओं को प्रेरणा लेनी चाहिए। सेवक के प्रति कैसा अनुराग होना चाहिए यह राम और हनुमान के बीच प्रेम को देखना चाहिए। उनके जीवन में एक भी उदाहरण नहीं मिलता कि उन्होंने किसी सज्जन का विरोध या उपहास किया हो। उन्होंने जो भी किया देशकाल परिस्थिति के अनुसार किया। राम का समस्त निर्णय शास्त्र सम्मत और देशकाल सम्मत था।

राजा राम प्रजा के विचार को जानने के लिए आकुल रहते हैं। राज्य के निरीक्षण में वे अकेले भेष बदलकर निकल जाते हैं। वनवास से लौटने के बाद नागरिक अभिनंदन सभा में राम ने घोषणा की कि जो अनीति कछु भाखहु भाई। राम ने कहा कि मेरे राज्य में जो कुछ भी आपको अनुचित लगे उसको बिना भय के आप कहें क्योंकि लोक अपवाद से वह डरते नहीं हैं। आज के सत्ताधीशों को राम से प्रेरणा लेनी चाहिए। राम ने जंगल,महल,सुख दुख,निन्दा प्रशंसा, यश अपयश आदि की परवाह नहीं की। राजा को सत्य का आग्रही होना चाहिए। प्रजा के विचार को चिंतन में लाना चाहिए। इसका प्रमाण रामराज्य में मिलता है। रामराज्य में तर्क की पूरी छूट थी। समस्त कलाओं के प्रति वह आदर रखते थे। शील ,विनय और औदार्य में उनका कोई सानी नहीं है।

मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम सामाजिक समरसता के प्रतीक हैं। वनवास के दौरान वह श्रंगवेरपुर के राजा निषाद राज गुह का आतिथ्य ग्रहण करते हैं। श्रीराम जब श्रंगवेरपुर पहुंचते हैं तो वहां के राजा निषाद राज गुह ने अपने भाई बंधुओं

को बुलाकर बहंगियों में फल फूल भरकर उनसे मिलने के लिए चला। रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड में गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है कि

लिए फल मूल भेंट भरि भारा।मिलन चलेउ हिय हरषु अपारा।।
करि दण्डवत भेंट धरि आगे। प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागे।
सहज सनेह बिबस रघुराई। पूंछी कुशल निकट बैठाई।।

राम जी निषाद राज को निकट बैठाकर उसका कुशल क्षेम पूछते हैं। इसके बाद उसके द्वारा लाये गये फल को ग्रहण करते हैं। निषादराज गुह राम से श्रंगवेरपुर नगर में चलने का अनुरोध करते हैं। तब श्रीराम जी उनसे कहते हैं कि पिताजी की आज्ञा के अनुसार मुझे 14 वर्ष तक मुनियों का व्रत और वेष धारण कर मुनियों के योग्य आहार करते हुए वन में ही बसना है। गांव के भीतर निवास करना उचित नहीं है। इसके बाद निषादराज राम के साथकृसाथ चलता है। गंगा पार जाने के लिए केवल से नाव मांगते हैं। केवल के प्रेम में विहवल होकर राम उसे गले लगाते हैं। चित्रकूट पहुंचने पर कोल किरात ने सुन्दर कुटी बनाई। माता शबरी की कुटिया में पधारकर राम उनके हाथों से फल ग्रहण करते हैं। पूरे वनवास के दौरान वन में निवास करने वाला वनवासी समाज ने ही भगवान राम का हर प्रकार से सहयोग किया। वनवास के दौरान राम जी जहां भी रूके उनके रहने योग्य पर्णकुटी और और अन्य साधन वनवासियों ने ही उपलब्ध कराया। संकटकाल में भी राम की सहायता वनवासी समाज ने ही की।

राम वनवासी समाज को संगठित कर शक्तिशाली रावण का मुकाबला करते हैं।

सुग्रीव की मित्रता निभाई और गिद्धराज जटायु को गले लगाते हैं। सीता हरण के बाद वह चाहे हनुमान, जामवंत हों, अंगद हों, नल, नील या अन्य योद्धा सब वनवासी समाज से ही थे। लंका पर चढ़ाई करने के लिए समुद्र पर सेतु बांधने का महान दुष्कर कार्य वनवासी समाज के सहयोग से ही संभव हो सका। राम केवल ताकतवर व बड़ों को ही सम्मान नहीं देते बल्कि पूरे समाज को सम्मान देते हैं। रामसेतु के निर्माण में गिलहरी का भी सहयोग लेते हैं। लंका जाते समय जब समुद्र से राम विनती करते हैं तीन दिन बीत जाता है समुद्र रास्ता नहीं देता। तब राम कहते हैं – बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति,बोले राम सकोप तब भय बिन होई न प्रीति। राम कहते हैं हे लक्ष्मण धनुष बाण लाओ, मैं अग्निबाण से समुद्र को सुखा डालूं। लछिमन बान सरासन आनू, सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू। रामायण में प्रसंग आता है कि लंका में राम रावण युद्ध के समय जब विभीषण सामने रावण को रथ पर आरूण देखते हैं और राम के पैर में पनही भी नहीं है। तब विभीषण जीत पर शंका व्यक्त करते हुए कहते हैं। हे प्रभु 'रावण रथी विरथ रघुबीरा। हम कैसे जीतेंगे। तब रामचन्द्र जी विभीषण से कहते हैं कि – सौरज धीरज जाहि रथ चाका। सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका। यनि किसी भी कार्य की सिद्धि मात्र उपकरणों के सहारे नहीं हो सकती उसके लिए अंतःकरण की शक्ति जरूरी होती है।

आदर्श शासन व्यवस्था के रूप में दुनियाभर में रामराज्य का उदाहरण दिया जाता है। जहां विकास के साथकृसाथ स्वतंत्रता,सुरक्षा,समानता,स्वावलम्बन और समृद्धि हो वही रामराज्य है। रामराज्य का अर्थ यह है कि गरीबों की रक्षा होगी, सब कार्य धर्म पूर्वक किए जाएंगे और लोकमत का आदर किया जाएगा। वहां जनजीवन समरस हो। वही रामराज्य है। गोस्वामी तुलसीदास ने स्वयं रामचरित मानस में कहा है – दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहहिं काहुहि ब्यापा।। महात्मा गांधी ने भी रामराज्य की वकालत की थी। आज भी लोग यदि अपना आचरण धर्मानुसार करना शुरू कर दें तो रामराज्य आने से कोई नहीं रोक सकता। रामराज्य को केवल भौतिक सुविधाओं के नजरिए से ही नहीं बल्कि उसमें रहने वाले नागरिकों के आचरण, व्यवहार और विचार और मर्यादाओं के पालन के हिसाब से देखना चाहिए। रामराज्य के सभी नागरिक आत्म अनुशासित थे, वह शास्त्रो व वेदों के नियमों का पालन करते थे। जिनसे वह निरोग, भय, शोक और रोग से मुक्त होते थे। सभी नागरिक दोष और विकारों से मुक्त थे यानि वह काम, क्रोध, मद से दूर थे।

जैसे राम ने सम्पूर्ण समाज को संगठित कर रामराज्य की स्थापना की थी आज ठीक उसी प्रकार का प्रयास वर्तमान में भारत की राज सत्ता कर रही है। वंचित समाज को मुख्यधारा में लाकर हर प्रकार से समर्थ व स्वावलम्बी बनाने का कार्य भारत सरकार कर रही है। जातिभेद व अस्पृश्यता आज समाज से दूर हो रही है। सामाजिक समरसता का वातावरण देशभर में बन रहा है।

संकल्प समृद्ध विकसित भारत 2047

शिव सिंह

”यह भारत के इतिहास का वह दौर है जब देश लंबी छलांग लगाने जा रहा है” ”आइडिया’ शब्द की शुरुआत ’आई’ अक्षर यानी ’मैं’ से होती है, जैसे ’भारत’ की शुरुआत ’आई’ अक्षर यानी ’मैं’ से होती है, विकास के प्रयास स्वयं से शुरू होते हैं” ”युवा शक्ति परिवर्तन की वाहक भी है और परिवर्तन की लाभार्थी भी है” ”यह अमृत काल चल रहा है और यह भारत के इतिहास का वह कालखंड है जब देश एक लंबी छलांग लगाने जा रहा है” प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मुखारबिंदु से निकले इन शब्दों में देश को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प छुपा हुआ है। ये शब्द ’विकसित भारतञ्च2047 अभियान शुरू होते ही देशवासियों की आवाज बन गए हैं। खासकर छात्रों–युवाओं की। विकसित भारतञ्च2047 अभियान की आत्मा को समझने के लिए हम सबको आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विचारों को आत्मसात करते हुए जन–जन तक पहुंचाने की जरूरत है। प्रधानमंत्री मोदी के शब्दों में कहें तो एक राष्ट्र अपने लोगों के विकास से ही विकसित होता है और वर्तमान युग में व्यक्तित्व विकास के महत्व को रेखांकित करते हुए किसी भी राष्ट्र के जीवन में, इतिहास एक समय अवधि प्रदान करता है जब राष्ट्र अपनी विकास यात्रा में तेजी से प्रगति कर सकता है। यह कहना पूरी तरह से उचित ही होगा कि भारत के लिए, ”यह अमृत काल चल रहा है” और ”यह भारत के इतिहास का वह कालखंड है जब देश एक लंबी छलांग लगाने जा रहा है”। ऐसा कहने की बड़ी वजह यह है कि भारत के आस–पास के कई देशों ने एक निर्धारित समय सीमा में विकास की लंबी छलांग लगाई और विकसित राष्ट्र बन गए। इसलिए भारत के लिए, यह समय है, सही समय है और इस अमृत काल के प्रत्येक क्षण का उपयोग किया जाना चाहिए। दरअसल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारतञ्च2047 अभियान के प्रेरणा के स्रोत के रूप में स्वतंत्रता के लिए गौरवशाली संघर्ष ही है, जब उस समय के प्रत्येक प्रयास जैसे सत्याग्रह, क्रांतिकारी आन्दोलन, असहयोग, स्वदेशी और सामाजिक और शैक्षिक सुधार स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा में थे और आजादी के लिए समर्पित युवाओं की एक पूरी पीढ़ी अस्तित्व में आई। इसलिए आज आज विकसित भारत के लिए हर संस्था, हर व्यक्ति को इस संकल्प के साथ आगे बढ़ना चाहिए कि हर प्रयास और कार्य करना होगा। प्रधानमंत्री मोदी हमेशा युवाओं को प्रेरित करते रहते हैं और इस विकसित भारत अभियान में भी केंद्र बिंदु में युवाओं को ही रखा है। युवाओं की एक कार्यशाला में उन्होंने स्वयं प्रत्येक विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और युवाओं की ऊर्जा को ’विकसित भारत’ के सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में लगाने की आवश्यकता को रेखांकित कर विकसित भारत के निर्माण की दिशा में सभी धाराओं को जोड़ने पर बल दिया। ’विकसित भारत’ के विकास की अवधि एक परीक्षा समान इस विकसित भारत में जल संरक्षण, बिजली की बचत, खेती में कम रसायनों का उपयोग और सार्वजनिक परिवहन के उपयोग के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ–साथ शिक्षाविद् समुदाय से स्वच्छता अभियान को नई ऊर्जा प्रदान करने, जीवनशैली के मुद्दों से निपटने और युवाओं द्वारा मोबाइल फोन से परे दुनिया की खोज करने के तरीके भी खोजे जाएगे। ताकि डिग्री धारकों के पास कम से कम एक व्यावसायिक कौशल होना चाहिए। प्रधानमंत्री ने युवाओ से अपने संवाद में ’विकसित भारत’ के विकास की अवधि को एक परीक्षा की अवधि से उपमा देते हुए, लक्ष्य को पूरा करने के लिए आवश्यक अनुशासन बनाए रखने में विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, तैयारी और समर्पण के साथ–साथ परिवारों के योगदान का भी उल्लेख किया। हमारे सामने 25 साल का अमृत काल 'विकसित भारत' अभियान को मंजिल का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए 24 घंटे काम करना है और यह वातावरण एक परिवार के रूप में बनाना है। प्रधानमंत्री मोदी बड़े विश्वास के साथ कहते हैं कि भारत आने वाले 25–30 वर्षों तक कामकाजी उम्र की आबादी के मामले में अग्रणी बनने जा रहा है और दुनिया इस बात को मानती है। युवा शक्ति परिवर्तन की वाहक भी है और परिवर्तन की लाभार्थी भी है। इसलिए सरकार देश के हर युवा को विकसित भारत की कार्ययोजना से जोड कर विकसित भारत के निर्माण के लिए काम कर रही है। अगर देखा जाय तो यह सच भी है और भारतीय जनता पार्टी की दूरदर्शी नीति है कि देश की प्रगति की रूपरेखा अकेले सरकार नहीं बल्कि राष्ट्र तय करेगा और सबका साथ सबका विकास के मूलमंत्र वाली सरकार का भी यही सोचना है कि देश के प्रत्येक नागरिक की इसमें भागीदारी और सक्रिय भागीदारी होगी और सबका प्रयास की शक्ति को उजागर करते हुए स्वच्छ भारत अभियान,

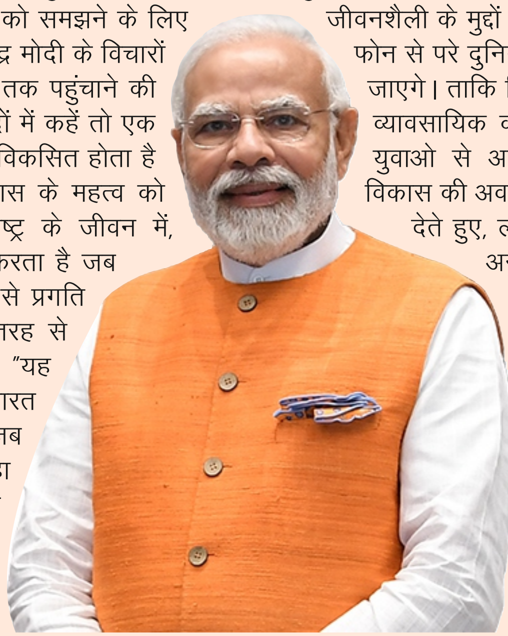

डिजिटल इंडिया अभियान, कोरोना महामारी के दौरान लोगों की भूमिका और वोकल फॉर लोकल इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। यह है विकसित भारत@2047 का उद्देश्य आजादी के 100वें वर्ष यानी वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने का दृष्टिकोण आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के विभिन्न पहलुओं को सम्मिलित करना है। एक चुनौती बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने के साथ ही रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को भी अधिक सुदृढ़ करना होगा। भ्रष्टाचार पर शिकंजा और सरकारी कामकाज को अधिक पारदर्शी बनाने की भी इस अभियान की एक बड़ी चुनौती है। भ्रष्टतंत्र तो देश की अर्थव्यवस्था को खोखला रहा है लेकिन संतोष की बात है कि वर्तमान सरकार ने भ्रष्टाचारियों की कमर तोड़ दी है। इनमें नौकरशाह से लेकर राजनेता तक शामिल हैं। विकसित देश किसी देश को तब माना जाता है जब वहां के लोगों की आय अधिक होने के साथ ही, विकसित इंडस्ट्री और मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर हो. दुनिया के विकसित देशों पर गौर करें तो सबसे पहले स्थान पर नॉर्वे है फिर अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, जर्मनी, कनाडा, फ्रांस,रूस , ऑस्ट्रेलिया , इटली , स्वीडन और स्विट्जरलैंड ऐसे देश हैं। इन विकसित देशों में प्रति व्यक्ति आय अधिक है और इसकासंयुक्त राष्ट्र करता है। विकसित भारत बनाने के लिए यह करना होगा भारत को विकसित देश बनने के लिए क्या–क्या करना होगा ? यह सबसे बड़ा सवाल है, लेकिन इन सभी सवालों के जवाब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विकसित भारत से जुड़े कार्यक्रमों में अपने संबोधन के जरिए स्पष्ट कर चुके हैं। मसलन जीडीपी किसी भी देश की आर्थिक सेहत बताती है तो भारत की अर्थव्यवस्था देखें तो वर्ष २०१४ से जबसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बने हैं, तब से लगातार सुधार हो रहा है और वर्तमान में दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है. भारत को विकसित देश बनने के लिए जीडीपी बढ़ाने के लिए आत्मनिर्भर भारत अभियान से चल रहा है, ताकि प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोतरी हो रही है। इंडस्ट्रियलिज्म यानी औद्योगिकरण विकसित देश को मापने का एक पैमाना इंडस्ट्रियलिज्म भी है, क्योंकि औद्योगीकरण से न सिर्फ रोजगार बढ़ता है बल्कि किसी देश का आयात घटाता है और निर्यात बढाता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लोकल फार वोकल के साथ–साथ मेड इन इंडिया और स्वदेशी निर्माण पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। हाल के रक्षाा सौदों से साफ है कि अब भारत रक्षा क्षेत्र में लड़ाकू विमान से लेकर मिसाइल तक स्वयं बनाने में सक्षम हो गया है। जीवन स्तर और बुनियादी जरूरतें पूरी करना विकसित भारता में औद्योगिक विकास के साथ ही सबसे जरूरी है कि लोगों का रहन–सहन बेहतर होना और उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास जैसी बुनियादी सुविधाएं मिलना। संयुक्त राष्ट्र ह्यूमन डेवलपमेंट इंडेक्स की रैंकिंग जारी करके यह बताता है कि कोई देश कितना विकसित है। इस दृष्टिकोण से देखें तो भारत देश की स्थिति बेहतर होती दिख रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में प्रधानमंत्री आवास योजना के जरिए लोगों को घर बनाने के लिए जमीन और आर्थिक मदद दी जा रही है। स्वास्थ्य के लिए आयुष्मान योजना, श्रमिकों, रेहड़ी, दैनिक श्रमिकों के कल्याण की विभिन्न योजनाएं संचालित की जा रही हैं। खास बात यह है कि इनमें कई योजनाओं के लाभार्थियों को नकद पैसा उनके सीधे बैंक खाते में भेजा जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्र में भी डिजिटल पेमेट तेजी से आगे बढ़ रहा है। दुनिया में बज रहा भारत का डंका वर्ष २०१४ से पूरी दुनिया मं भारत की एक अलग रंग की तस्वीर बनती दिख रही है। दुनिया के शक्तिशाली देश अब हर अंतरराष्ट्रीय मुद्दे पर भारत के रुख को देखने के लिए मजबूर हैं। हाल में देखें तो यूक्रेन युद्ध को खत्म कराने के लिए हर बड़ा राष्ट्राध्यक्ष भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से हस्तक्षेप करने के लिए कह रहा है। ऐसा ही कुछ इजराइल और फलस्तीन विवाद में भारत के हस्तक्षेप की अपेक्षा की जा रही है। पड़ोसी देश सब भारत से मदद के इच्छुक रहते हैं और भारत बड़े भाई की भूमिका में आवश्यकतानुसार मदद भी कर रहा है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि कश्मीर में धारा ३७० को खत्म करने पर पाकिस्तान की तिलमिलाहट को किसी भी बड़े मुस्लिम देश का साथ नहीं मिला। यह सब देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शी विदेश नीति और साहसिक फैसलों से हो रही है। विदेशी मीडिया में आएदिन ऐसे बयान आते हैं, जिसमें भारतीय नेतृत्व की सराहना होती है।

संकल्प यात्रा के बहाने विकसित भारत के तराने

सियाराम पांडेय 'शांत'

विकास सहज–स्वाभाविक प्रक्रिया है। प्रकृति का एक भी जीव ऐसा नहीं जो विकास का आकांक्षी न हो। वनस्पतियां भी अपना विस्तार करती हैं। बेकार समझे जाने वाले झाड़–झंखाड़ भी अपना दायरा बढ़ाते रहते हैं। फिर सोने की चिड़िया रह चुका भारत विकसित देश क्यों न बने? यह सवाल हर आम और खास के मन–मस्तिष्क में गूंजना चाहिए। देश की आजादी के 76 वें साल में अगर हमें विकसित भारत के लिए प्रण करना पड़ रहा है, संकल्प यात्रा निकालनी पड़ रही है तो इसे विडंबना नहीं तो और क्या कहा जाएगा? लेकिन जब जागे तभी सबेरा।

अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पूर्व की सरकारों ने इस पर चिंतन किया होता तो कोई कारण नहीं कि अब तक इस देश का आर्थिक कायाकल्प न हो गया होता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री बनने के दिन से ही देश के समग्र विकास के सपने देखने और तन्निमित्त योजनाएं बनानी शुरू कर दी थी। उन्होंने लाल किले की प्राचीर से सभी सांसदों का आह्वान किया था कि वे अपने संसदीय क्षेत्र के एक गांव को गोद लें और उसे सर्व सुविधा संपन्न आदर्श गांव बनाएं लेकिन सांसदों ने इसमें भी राजनीतिक नुक्श तलाशे। अगर सांसद और विधायकों ने इस दायित्व को जिम्मेदारी से निभाया होता तो ग्राम प्रधानों और ब्लॉक प्रमुखों को भी इससे प्रेरणा मिलती और इस छोटी सी पहल का कितना व्यापक असर होता, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह देश सभी का है। इस देश के सभी एक अरब 38 लाख नागरिकों का दायित्व है कि वे देश को प्रगति के परम वैभव के शिखर तक लेकर जाएं। अपने आचरण से दुनिया के देशों को शिक्षा दें कि वे भी भारत का अनुगमन करें और सुख–समृद्धि ,शांति और शुचिता का जीवन जिएं। भारत में तो वेद और उपनिषद हमेशा से ऐसा सरल–सहज व्यवहार करने की प्रेरणा देते रहे हैं जो अपने लिए तो सुखकर हो लेकिन उससे दूसरों को कष्ट न हो बल्कि उन्हें उससे कुछ नया सीखने और करने की प्रेरणा मिले। **'स्वं–स्वं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्याः सर्व मानवाः'** का संदेश भारत भूमि से ही दुनिया भर में गूंजता रहा है। यही वह महान देश है, जहां के नागरिकों ने हमेशा विश्वमंगल की कामना की है। भारतवासियों और यहां के नेतृवर्ग को इतना तो सोचना ही पड़ेगा कि भारत के विकास रथ में आज तक विकासशील होने का ही लेबल क्यों लगा हुआ है? इस पर गहन आत्मचिंतन की जरूरत है।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाली सरकार का मानना है कि जब देश की आजादी की सौवीं सालगिरह वर्ष 2047 में मनाई जाए तो भारत विकसित देश हो और उसकी अर्थव्यवस्था दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हो। यह बहुत कठिन लक्ष्य नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झारखंड के खूंटी में विकसित भारत संकल्प यात्रा की शुरुआत की थी और कहना न होगा कि यह यात्रा देश के हर गांव में पहुंच रही है। विकास योजनाओं की न केवल जानकारी दे रही है बल्कि यह भी पता लगा रही है कि सरकार द्वारा शुरू की गई विकास योजनाओं का लोगों को लाभ मिल रहा है या नहीं। मिल रहा है तो कितना लाभ मिल रहा है। पूरा लाभ मिल रहा है या आंशिक लाभ मिल रहा है। परेशानियों के साथ मिल रहा है या निरापद रूप से मिल रहा है। रिश्वत देकर मिल रहा है या ईमानदारी पूर्वक सहजता से मिल रहा है। इस निमित्त जगह–जगह शिविर लगाए जा रहे हैं, नुक्कड़ नाटकों का मंचन कर लोगों को सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

आजादी के बाद से आज तक योजनाएं तो खूब बनीं लेकिन निगरानी के अभाव में वे लालफीताशाही की भेंट चढ़ गईं। इसमें संदेह नहीं कि अब लाभार्थियों को मिलने वाली योजना राशि सीधे उसके बैंक खाते में जाती है। बिचौलियों का कोई झंझट ही नहीं है लेकिन लेटलतीफी और अड़ंगेबाजी तो हो ही सकती है।

आजादी के बाद से आज तक योजनाएं तो खूब बनीं लेकिन निगरानी के अभाव में वे लालफीताशाही की भेंट चढ़ गईं। इसमें संदेह नहीं कि अब लाभार्थियों को मिलने वाली योजना राशि सीधे उसके बैंक खाते में जाती है। बिचौलियों का कोई झंझट ही नहीं है लेकिन लेटलतीफी और अड़ंगेबाजी तो हो ही सकती है। सरकार इस मामले में बेहद गंभीर है और अपने स्तर पर वह ऐसा एक भी लेकुना नहीं छोड़ना चाहती जो आम जन की सुविधाओं और विकास की राह का रोड़ा बने। देश के कोने–कोने में केंद्र सरकार की योजनाओं की सूचना और लोगों तक उसके लाभ को पहुंचाने के मकसद से शुरू की गई विकसित भारत संकल्प यात्रा का जाना अपने आप में गौरव की बात है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से अपने जीवन में नौ संकल्प लेने का आग्रह किया है। इसमें जल संरक्षण, डिजिटल भुगतान को प्रोत्साहन, स्वच्छता, स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा, देश के विभिन्न स्थानों की यात्रा, प्राकृतिक खेती, मोटे अनाज को प्रोत्साहन, तंदुरुस्ती और कम से कम एक गरीब परिवार की सहायता करना शामिल है। हर देशवासी अगर इन संकल्पों पर अमल करने लगे तो इस धरती को स्वर्ग से भी सुंदर बनने से

कौन रोक सकता है? इसी साल 15 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से अगले 25 साल की यात्रा को देश के लिए बेहद अहम बताया था। इसे देश का अमृत काल करार दिया था। विकसित भारत, गुलामी की हर सोच से मुक्ति, विरासत पर गर्व, एकता और एकजुटता व नागरिकों द्वारा अपने कर्तव्य पालन के पंच प्रण बताए थे और कहना न होगा कि देश के तमाम भाजपा शासित राज्यों में ये प्रण प्रमुखता से लिए भी गए। उन पर अमल कितना हुआ, यह तो नहीं कहा जा सकता लेकिन विचार का भी अपना प्रभाव होता है, इसे नकारा तो नहीं जा सकता।

संसद लोकतंत्र का मंदिर होता है, यह बातें तो तमाम नेताओं ने कहीं लेकिन संसद की ड्योढ़ी पर माथा टेकने वाले प्रधानमंत्री तो नरेंद्र मोदी ही हैं। उन्होंने पहली बार देश को संसद का सम्मान करने का संदेश दिया। यह नरेंद्र मोदी ही थे जिनके कार्यकाल में संसद में संविधान की प्रस्तावना का पाठ सत्तापक्ष और विपक्ष के सभी सांसदों ने किया, इसके बाद भी अगर उस पर अमल करने का पक्ष गौण रहा,तो इसके लिए आखिर किसे जिम्मेदार माना जाए।

संविधान की प्रस्तावना में लिखा है कि 'हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करनेवाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर 1949 ई. (मिति मार्ग शीर्ष शुक्ल सप्तमी, सम्वत् दो हजार छह विक्रमी) को एतदद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं। कहना न होगा कि संविधान की प्रस्तावना 13 दिसम्बर 1946 को जवाहर लाल नेहरू द्वारा सविधान सभा में प्रस्तुत की गयी थी। केएम मुंशी ने तो इस प्रस्तावना को भारत की 'राजनीतिक कुण्डली'तक कहा था। अब तक हम दुनिया के सबसे अमीर देशों में गिने जाते। हमारी अपनी बौद्धिक क्षमता का दोहन कर दुनिया के तमाम देश कहां से कहां पहुंच गए और हमें आज भी अपने देश के लोगों को जागरूक करना पड़ रहा है। उन्हें यह बताना पड़ रहा है कि स्वच्छ रहिए, स्वस्थ रहिए। योग करिए, निरोग रहिए। यह सब भारत की सामान्य दिनचर्या का हिस्सा हुआ करती थी। पर्यावरण संरक्षण, पादप संरक्षण, नदीकृतालाबों और कुओं का संरक्षण हमारा सहज स्वभाव था। दीपदान और ज्ञानदान हमारे संस्कारों के आवश्यक अंग हुआ करते थे। हमें चिंता करनी होगी कि हमारा समाज भटक कहां गया। हमसे क्या गलती हुई, जो हम सामाजिक, नैतिक पराभव के गर्त में गिरते चले गए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू की गई विकसित भारत संकल्प यात्रा को कुछ लोग भले ही भाजपा के राजनीतिक लाभ लेने की कोशिशों के तौर पर देखें लेकिन इसके अपने बड़े फायदे भी हैं। समाज को निरंतर जागरूक करना, उन्हें सोते से जगाते रहना भी अपने आप में बड़ा काम है। विकसित भारत संकल्प यात्रा दरअसल पूरे भारत में, एक परिवर्तनकारी अभियान है। यह आशा और अपेक्षा का एक जीवंत कारवां है। यह सभी भारतीयों के घरों तक सशक्तीकरण और उज्जवल भविष्य को सुनिश्चित करने का अभिनव और सुनियोजित प्रयास है। इस यात्रा का उद्देश्य विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में नागरिकों के बीच जागरूकता पैदा करना और योजनाओं के शत–प्रतिशत संतृप्ति के लिए जनभागीदारी की भावना में उनकी सहभागिता को सुनिश्चित करना है। यह भारत सरकार की अब तक की सबसे बड़ी पहल है। इसका उद्देश्य 25 जनवरी, 2024 तक देश की 2.60 लाख ग्राम पंचायतों और 4000 से अधिक शहरी स्थानीय निकायों को आच्छादित करना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस क्रम में न केवल विकसित भारत संकल्प यात्रा के उन लाभार्थियों से संवाद कर रहे हैं जिन्हें सरकारी योजनाओं से लाभ प्राप्त हुआ है, बल्कि विभिन्न राज्यों में इस यात्रा को भी हरी झंडी भी दिखा रहे हैं। कहना न होगा कि केवल एक महीने की लघु अवधि में, यह यात्रा देश की 68,000 ग्राम पंचायतों में 2.50 करोड़ से अधिक नागरिकों तक पहुंच चुकी है। इसके अलावा, लगभग 2 करोड़ व्यक्तियों ने विकसित भारत संकल्प भी लिया है और केंद्र सरकार की योजनाओं के 2 करोड़ से अधिक लाभार्थियों ने 'मेरी कहानी मेरी जुबानी' पहल के तहत अपने अनुभव साझा किए हैं। सत्ताजब विकास के सपने देखती है और उसे पूरा करने के लिए अपना एक कदम आगे बढ़ाती है तो उसके चमत्कारी परिणाम तो होते ही हैं। विकसित भारत संकल्प यात्रा न केवल देश का एक बड़ा भरोसा है, बल्कि वास्तविक सुधारों की एक बड़ी संभावना भी है।

श्रद्धा परमप्रीति है!

हृदयनारायण दीक्षित

संशय का महत्व है। संशयी प्रत्यक्ष पर पूरा विश्वास नहीं करता। वह तर्क करता है। विश्वासी से संशयी बड़ा है। विश्वासी तृप्त है और संशयी बेचैन, अतृप्त। भारतीय जीवनशैली में अंधविश्वास को कोई जगह नहीं मिला। लेकिन विश्वासी और संशयी से भी बड़ा जीवन मूल्य है श्रद्धा। श्रद्धा और विश्वास में अंतर है। अस्तित्व के प्रति प्रेम का नाम है श्रद्धा। श्रद्धा साधारण प्रीति नहीं। परम प्रीति है। वैज्ञानिक संपूर्ण जानकारी के लिए प्रयासरत हैं। गैर जाने भाग के बारे में जानकारियां परिपूर्ण नहीं हैं। हमारी जानकारी ही है कि हम इसे नहीं जानते। लेकिन यह जानकारी भी पर्याप्त है। इससे शोध के प्रयास की तीव्रता बढ़ती है। अस्तित्व का इससे भी बड़ा भाग अज्ञेय है। जाने हुए, जानने की सूची में आए हुए और बिना जाने भाग सहित संपूर्ण अस्तित्व के प्रति हमारी प्रीति का नाम है श्रद्धा। श्रद्धा कोई विचार नहीं है। श्रद्धा, पंथ, मत, मजहब या रिलीजन के उपदेशों वाला विश्वास नहीं। श्रद्धा अनुभूति है। बूंद के हृदय में सागर का साक्षात्। क्षर में अक्षर का प्रत्यक्ष। सोंचना साधारण मानसिक कार्रवाई है। भारतीय दृष्टि में हरेक मानसिक या बौद्धिक कार्रवाई का आदि अंत ज्ञान है। लेकिन ज्ञान का अवसान कर्म में होना चाहिए। कोरे शब्द ज्ञान का कोई मतलब नहीं। वैसे कर्म का अवसान भी ज्ञान में होता है। कर्म करते–करते सप्रयास या अनायास अंतःकरण से कोई सुगंध उठती है। गंध आच्छादन होता है। कोई गीत उगता है। संगीत आता है। मेघ आते हैं, बिना मानसून ही और सब कुछ रसमय, गंधमादन और गीत संगीत से भर जाता है। यह हुई श्रद्धा। संभव है कि अब तक ऐसा नहीं हुआ हो लेकिन श्रद्धा है कि ऐसा हो सकता है किसी भी क्षण। उस क्षण या होनी की धैर्यपूर्ण प्रतीक्षा भी श्रद्धा ही है। मेघ आएंगे ही, बादलों को क्यों कोसना? सूर्य उगेंगे ही, अंधेरे से क्या उलाहना। ऊषा आएगी ही, अंधकार से क्यों उलझना? सूर्य अरूण तरूण होकर हमें प्रकाश किरणो से नहलाएगे ही अधीर क्यों होना? ऐसी आश्वस्त प्रतीक्षा श्रद्धा है। श्रद्धा आनंद आश्वस्ति है।

भारतीय इतिहास का उत्तर वैदिक काल अग्निधर्मा था। यज्ञ प्रतिष्ठा की अग्नि आंच थी ही, ज्ञान अग्नि के ताप से तपे उपनिषदों के आग्नेय मंत्र भी इसी समय उगे।

भारतीय इतिहास का उत्तर वैदिक काल अग्निधर्मा था। यज्ञ प्रतिष्ठा की अग्नि आंच थी ही, ज्ञान अग्नि के ताप से तपे उपनिषदों के आग्नेय मंत्र भी इसी समय उगे। इसी साहित्य के एक आनंदवर्द्धन मंत्र में 'श्रद्धा' को पत्नी और सत्य को यजमान कहा गया है–श्रद्धा पत्नी सत्यं यजमानः। यहाँ यज्ञ का सुन्दर प्रतीक है। यज्ञ में पति–पत्नी साथ बैठते थे। पुरोहित लोककल्याण और यज्ञ आयोजक के लिए मंत्र बोलते थे। यज्ञ के आयोजक यजमान कहे जाते थे। पत्नी के बिना पारंपरिक कर्मकाण्ड पूरे नही होते। इस मंत्र में 'सत्य' यजमान है। यज्ञ साधारण हवन नहीं। वैदिक अनुभूति मंप अस्तित्व की पूरी गतिविधि भी यज्ञ ही है। विज्ञान, दर्शन, योग या शोध का उद्देश्य 'सत्य' प्राप्ति है। यहां सत्य ही आनंद है। मंत्र का दूसरा भाग बड़ा रोमांचकारी और प्रीतिकर है – "श्रद्धा सत्यं तत् अत्युतमं मिथुनं। पत्नी श्रद्धा और यजमान सत्य का मिथुन – प्रेमपूर्ण मिलन अतिउत्तम है। इसी मिलन से आनंद लोक मिलते हैं।" श्रद्धा और सत्य की 'लवस्टोरी' रमणीय है। श्रद्धा और सत्य का मिलन ही आनंद प्राप्ति का उपाय है। मिलन भी सामान्य नहीं – श्रद्धया सत्येन मिथुने। ठीक से मिलन। जब दो नहीं बचे तब। अद्वय मिलन। श्रद्धा और सत्य दो अनुभूतियां जान पड़ती हैं। दोनो की प्रीति अजर अमर है। सत्य मिला तो श्रद्धा भी मिली। श्रद्धा आई, प्रगाढ़ हुई, संपूर्ण हुई तो सत्य की लब्धि। सत्य श्रद्धाहीन नहीं हो सकता। श्रद्धा सत्यविहीन नहीं हो सकती। सत्यहीन श्रद्धा अंधविश्वास है। बिना जाने, देखे, समझे और अनुभव रस के अभाव के बावजूद मान लेना श्रद्धा नहीं है। यहाँ लोकजीवन में वरिष्ठों के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए अनेक शब्द हैं। 'श्रीमान' कहने का अपना सुख है। मान्यवर या माननीय में मानने की ध्वनि है। 'माननीय' में अंतःकरण की हूक नहीं। बिना जाने ही मान लेने की चूक जान पड़ती है। जनप्रतिनिधियों को 'माननीय' कहते हैं। कर्मकाण्ड की तरह यों ही। न प्रीति, न प्यार, न स्नेह। बस यों ही। बड़ों के प्रति आदर की सबसे गहरी अभिव्यक्ति है–श्रद्धेय।

श्रद्धेय में श्रद्धा योग्य जानने का संकेत है। श्रद्धेय बड़ा श्रद्धेय शब्द है। कहने में और सुनने में भी। यह सुनने वाले 'श्रद्धेय' को संकोची बनाता है और कहने वाले को विनयी। लेकिन श्रद्धा है कि श्रद्धा और सत्य का मिथुन भी

'श्रद्धेय' ही होना चाहिए। भौतिकवादी श्रद्धा को अंधविश्वास बताते हैं। कुछेक इसे भाववाद तक ले जाते हैं। 'श्रद्धा' मनोभाव नहीं है। ऋग्वेद में श्रद्धा भी एक देवता हैं। कहते हैं "श्रद्धा से ही अग्नि प्रज्जवलन होता है और श्रद्धा से ही आहुति समर्पण होता है।" यहां श्रद्धा विभूतियों का शिखर हैं–श्रद्धां भगस्य मूर्धनि। ऋषि उनका अनेकशः आवाहन करते हैं "हम प्रातः मध्यान्ह और प्रातः संध्या श्रद्धा का आवाहन करते हैं। वे श्रद्धा हमें परिपूर्ण श्रद्धा दें। श्रद्धे श्रद्धाययेह नः।" यहां श्रद्धा जीवन का ही भाग है। श्रद्धा में ज्ञान और प्रेम दोनो हैं। बुद्धि और हृदय की युति है। गद्य और काव्य एक साथ हैं। यहां विश्वास के साथ सत्य भी है। विचार और भाव की एका है।

श्रद्धा प्रतीक्षा है। असंशयी प्रतीक्षा। गणित के सूत्र जैसी। तैत्तिरीय ब्राह्मण में उन्हें विश्वर्निमात्री प्राकृतिक शक्ति की पुत्री बताया गया है। उन्हें 'सूर्यदुहिता' भी कहा गया है। श्रद्धा का उल्टा 'संशय' होगा। संशय ज्ञान यात्रा में सहायक है। संशय को दूर करने के लिए तर्क, प्रतितर्क, आचार्य और विज्ञान के उपकरण हैं। ये उपकरण महत्वपूर्ण हैं और सत्य भी हैं। ज्ञान या अनुभूति की कोई भी यात्रा शून्य से नहीं शुरू होती। प्रकृति भी शून्य से नहीं उगी। हम इन्द्रियबोध के कारण ही संसार से जुड़ते हैं। क्या आंख पर संशय कर सकते हैं? क्या कान, नाक, स्वाद या स्पर्श पर भी? संशयी को ऐसा करना ही चाहिए। तब प्रारम्भ कहां से करें? स्वयं की बुद्धि भी इन्द्रियबोध का ही परिणाम है। स्वयं की बुद्धि पर भी संशय हो तो क्या करेंगे? तीन उपकरण बताए गए हैं–प्रमाण, अनुमान और अनुभूत शब्द। प्रमाण अनुमान इन्द्रियबोध से जुड़े हैं। विद्वानों के शब्द श्रद्धा से।

श्रद्धा गहन आत्म विश्वास का पर्याय है। इन दिनों घने कोहरे में ठीक से नहीं दिखाई पड़ता। शीत घनत्व ज्यादा है। निकट देखना भी विकट है। गहन अंधकार में भी ऐसा ही होता है। कोहरे में सामान्य प्रकाश काम नहीं करता।

कोहरे के कारण दुर्घटनाएं होती हैं। जिम्मेदार लोगों की निन्दा होती है। ऐसी निन्दा में हताशा, निराशा विशेष महत्व पाते हैं। लेकिन कोहरा या अंधकार स्थायी नहीं है। सूर्य स्थायी है। वे कोहरे में भी होते हैं। समाजचेता का उत्तरदायित्व अंधकार का अस्थायित्व बताना और सूर्य तेजस् के सतत् प्रवाह का विवरण देना है। निराशा, हताशा नहीं आशा और उत्साह का वातावरण बनाना है। जीवन के प्रति पराजय नहीं उल्लास का भाव। जीवन के कृष्णपक्ष ही नहीं शुभ्र पक्ष की चर्चा भी होनी चाहिए। प्रकृति सृष्टि के प्रति 'श्रद्धा' भाव को पुष्ट करना जरूरी है।

इंडी गठबंधन- सिद्ध हुआ रामद्रोही

कांग्रेस ने ठुकराया निमंत्रण, अखिलेश ने पहचाना नहीं

मृत्युंजय दीक्षित

क्रमशः वामपंथी, तृणमूल, राजद, सपा के बाद कांग्रेस ने भी मुस्लिम तुष्टीकरण की विकृत राजनीति को आगे बढ़ाते हुए श्रीरामजन्मभूमि स्थल पर बन रहे भव्य राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण ठुकरा दिया है। स्पष्ट है कि कांग्रेस और इसके नेतृत्व में आकार ले रहा इंडी गठबंधन पूर्णतया हिंदू विरोधी है। कांग्रेस इस निर्णय से यह संकेत भी मिल रहे हैं कि कांग्रेस के अपने नेताओं और इंडी गठबंधन के सदस्य दलों के सनातन और हिन्दू विरोधी बयान कांग्रेस आलाकमान की सहमति से ही आ रहे थे। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश जहाँ एक और कह रहे हैं कि राम मंदिर का कार्यक्रम संघ व भाजपा का कार्यक्रम है वहीं दूसरी और यह आरोप भी लगा रहे हैं कि अधूरे

मंदिर का उद्घाटन कराकर भाजपा राजनैतिक लाभ लेना चाह रही है।

कांग्रेस ने जब 14 जनवरी से अपनी भारत जोड़ो न्याय यात्रा की शुरुआत करने की घोषणा की तभी संकेत मिल गया था कि कांग्रेस के नेता फिलहाल रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में नहीं जा रहे हैं। श्री रामजन्मभूमि और श्री राम से जुड़े कांग्रेस के इतिहास को देखते हुए यह स्वाभाविक भी था । जिन श्री राम के काल्पनिक होने का हलफनामा नयायालय में दिया हो भला उनकी जन्मभूमि पर बने मंदिर में उन्ही की प्राण प्रतिष्ठा में क्या मुंह लेकर जायेंगे ? और फिर जिनको "राम काल्पनिक हैं" कहकर खुश किया था उनको कैसे साधेंगे?

कांग्रेस के आदि नेता और प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने तो वर्ष 1949 में ही विवादित ढांचे से श्री रामलला को बाहर निकालने के प्रयास आरम्भ कर दिए थे और इसके लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री पर पर्याप्त दबाव भी बनाया था वो तो भला हो सनातन के प्रतिपालक अधिकारी के.के. नायर का जो दबाव में नहीं आए और सत्य का साथ दिया। सनातन के अपमान और मुस्लिम तुष्टीकरण की अपनी परंपरा कांग्रेस कैसे तोड़ सकती थी? कांग्रेस के इतिहास का स्मरण रखने वाले सुधीजन सोशल मीडिया पर उपहास में कह रहे हैं, "अच्छा ही है कांग्रेस का निर्णय, रामद्रोहियों का अयोध्या में क्या काम है?"

वैसे कांग्रेस के राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा सामरोह में न जाने से उसे आगामी लोकसभा चुनावों में नुकसान होने की संभावना ही अधिक है अगर कांग्रेस नेता समारोह में चले जाते तो सनातन हिंदू समाज में कांगेस के नाराजगी स्वाभाविक रूप से कम हो सकती थी किन्तु अब तो यह तय हो गया है कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी और प्रियंका आदि का चुनावों के समय मंदिर –मंदिर जाना केवल ढोंग और धोखा है। कांग्रेस पूरी तरह से मुस्लिम परस्त पार्टी है जिसका प्रमाण कर्नाटक और तेलंगाना आदि में देखने को मिल रहा है।

जब से राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा की तिथि की घोषणा हुई है तभी से इंडी गठबंधन के विभिन्न दलों के नेता एक के बाद एक राम मंदिर के खिलाफ कोई न कोई भड़काऊ बयानबाजी कर रह हैं । बिहार के चारा घोटाले सहित कई अन्य घोटालों में संलिप्त रहे राजद नेता लालू यादव

उनके परिवार के सदस्यों सहित उनके तमाम मंत्री व विधायक लगातार हिंदू विरोधी बयानबाजी कर रहे हैं। लालू पुत्र तेजस्वी ने कहा कि जब चोट लगेगी तब मंदिर जाओगे या अस्पताल, जब भूख लगेगी तब भी क्या मंदिर ही जाओगे। इसी पार्टी के एक नेता ने कहा कि मंदिर जाना व घंटी बजाना गुलामी की मानसिकता का प्रतीक है। तेजस्वी के भाई तेजप्रताप कहते हैं कि जब देश में गठबंधन की सता आयेगी तब असली रामराज्य आयेगा।

उधर अयोध्या वाले प्रदेश यानि उत्तर प्रदेश में समाजवादी नेता अखिले शयादव ने तो विश्व हिंदू परिषद के नेताओं को पहचानने से मना करते हुए निमंत्रण ठुकरा दिया है । अखिलेश के साथी और सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य के लिए दुआ करने वाले हैं। समाजवादी नेता अखिलेश यादव कह रहे हैं कि किसी का कोई हो लेकिन हमारा भगवान तो पीडीए है किंतु अखिलेश यादव को यह नहीं पता कि अब पीडीए भी उनके हाथ से निकलता जा रहा है और विकसित भारत संकल्प यात्रा से लेकर स्नेह यात्रा और फिर विश्वकर्मा योजना के कारण पीडीए समाज भी भारतीय जनता पार्टी की ओर उन्मुख होता जा रहा है।

गठबंधन की पार्टी द्रमुक सनातन को समाप्त करने की बात कर चुकी है उधर तृणमूल अल्लाह की कसम खा रही है, वामपंथियों का तो कहना ही क्या। इन परिस्थितियों में यदि लोकसभा चुनावों में मतों का ध्रुवीकरण होता है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी और उसके लिए

कारसेवकों के नरसंहार का समर्थन कर रहे हैं। स्वामी प्रसाद मौर्य के हिंदू समाज का अपमान करने वाले बयानों का अब उनकी अपनी ही पार्टी में मुखर विरोध हो रहा है और पार्टी के अन्य विधायक अखिलेश यादव से उनकी बार–बार शिकायत कर रहे हैं किंतु वह स्वामी प्रसाद मौर्य रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं क्योंकि उनके सिर पर अखिलेश का हाथ है। सिद्ध हो रहा है कि समाजवादी पार्टी मुस्लिम तुष्टीकरण और हिंदू समाज पर अत्याचार करने वालों का समूह मात्र है। यह वही समाजवादी पार्टी है जो हर चुनावों में मुस्लिम तुष्टीकरण के नाम पर अयोध्या मे बाबरी मस्जिद बनाने की घोषणा करती रही है। समाजवादी पार्टी के सांसद शफीकुर्रहमान वर्क जैसे लोग 22 जनवरी को घर में बंद रहकर बाबरी की वापसी कांग्रेस ही जिम्मेदार होगी। कांग्रेस की ओर से जयराम रमेश के बयान के बाद सब कुछ साफ हो चुका है, इसकी भूमिका सैम पित्रोदा पहले ही लिख चुके थे। अयोध्या में भगवान राम का मंदिर न बन पाये इसके लिए कांग्रेस ने पूरी ताकत लगा रखी थी। इंडी गठबंधन में शामिल सभी दल व नेता हिंदू सनातन संस्कृति, भारतीय सभ्यता व संस्कृति, भाषा, रहन सहन व खान पान के घोर विरोधी हैं।कांग्रेस ने सदा प्रभु राम को काल्पनिक माना माना था और रामसेतु तक को तोड़ने का उपक्रम किया।

सनातन समाज संभवतः अब एक ही कथन सुन रहा है, एक ही कथन जप रहा है – **"जाके प्रिय न राम बैदेही, तजिए ताहि कोटि बैरी सम जद्दपि परम सनेही"** ।

मित्रता के प्रतीक श्रीराम

भगवान राम के तीन सखा बताये गए हैं विभीषण जी, सुग्रीव जी और निषादराज जी। निषादराज जी को तो सिद्ध सखा बताया जाता है। निषाद राज के पिताजी और दशरथजी मित्र थे। प्रतापगढ़ जनपद से सटा आसपास का गंगा नदी का क्षेत्र, फाफामऊ, श्रृंगवेरपुर का पूरा इलाका निषादराज जी के ही हांथों में था। निषादराज के पिताजी अपने पुत्र को भेजा करते थे दशरथजी के पास जिससे उनको रामजी का सानिध्य प्राप्त हो सके और रामजी भी कभी–कभी अपनी अयोध्या की चौरासी कोस की सीमाओं से परे जाया करते थे। आज भी आप कभी चले जाइये चित्रकूट या प्रयागराज और उन लोगों से मिलिए जो नाव चलाते हैं, जो निषादराजजी के वंशज हैं तो वे आज भी बड़े गर्व से कहते हैं की रामजी हमारे सखा हैं।

कोल और भील समुदाय के लोगों को भी भगवान ने अपनाया। समाज के हर वर्ग को छुआ प्रभु श्रीराम ने। भगवान जब चित्रकूट गए अपने वनवास गमन की यात्रा में तब वो एक पर्णकुटी बना कर निवास करते थे। ऐसा कहा जाता हैं कि राघव जी इतने सुन्दर थे कि कोल और भील वनवासी समुदाय से लोग और स्त्रियां उनके सौंदर्य को निहारने के लिए आते थे। वे राम जी , लखन जी और सीता जी के वार्तालाप को बड़े कौतुहल से सुनते थे और प्रसन्न होते थे क्योंकि ये लोग नागरी थे और विश्व की प्राचीनतम नगरी अयोध्या से आये थे और राजा के लड़के थे।

(समाज के हर वर्ग को छुआ प्रभु श्रीराम ने)

वस्तुतः रामजी का दर्शन रामावतार में इतना सुलभ नहीं था, वो परकोटो में रहा करते थे। देवताओं के लिए भी उनसे मिलना इतना सहज न था। वनवास का एक उद्देश्य यह भी था कि सामान्य जनता को उनके अवतार का दर्शन हो सके। अन्यथा राम जी का दर्शन सामान्य जन–मानस के लिए इतना सुलभ नहीं था जितना श्री कृष्णा जी का था, जो गाय चराने के लिए जाया करते थे। कोल, भीलों ने भगवान राम से कहा कि प्रभु हम आप की बड़ी सेवा कर रहे हैं क्योंकि हम आपकी कुछ भी वस्तु चुरा नहीं रहे हैं और आप को परेशान भी नहीं कर रहे हैं। अब सोचिये अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान राम जी जिनका दर्शन शंकर आदि देवताओं के लिए भी दुर्लभ है वो ऐसे वचन सुन के मुस्कुराये और उनकी आँखों में आंसू आ गए। भगवान कितने भोले हैं, भगवान को पाने के लिए भोलापन चाहिए, दुर्गुणों से निवृत्ति नहीं। चोरी करना छूट जाए यह आवश्यक नहीं हैं लेकिन उनपर अपना अधिकार समझ कर के, उनसे वार्तालाप करने, उनसे मिलने कि इच्छा हो यह परम आवश्यक हैं। जैसे हैं हम वैसे उनके सामने उपस्थित हो जाएँ। जैसे जब कोई गंगा जी में नहाने जाता हैं तो पहले से स्नान कर के नहीं जाता। जो जैसे रहता हैं वैसे चला जाता हैं।

अहिल्याजी को श्राप मिला और वो शिला हो गयीं। वह महृषि गौतम कि पत्नी थीं जो त्रयम्बक क्षेत्र में रहते थे। उन्हीं के तपोबल से त्रयंबेश्वर क्षेत्र कि स्थापना हुई। अहिल्याजी अत्यंत रूपवती थीं , इतनी रूपवती थीं कि ऐसी रूपवती स्वर्गादि लोकों में भी नहीं थी। वास्तव में कहा जाय तो वो महृषि गौतम कि तपस्या का स्वरुप ही थीं। कथा अधिकांश जनो तो पता हैं कि कैसे राम जी ने उनका उद्धार किया। भगवान आये और महृषि विश्वामित्र जी ने कहा कि आप इनके ऊपर अपने चरण रखिये। भगवान का शील और सद्वृत्ति देखिए कि वो विचार करते हैं कि अहिल्या जी महृषि कि पत्नी हैं और हमारी ब्राह्मणी माता हैं कैसे इनके ऊपर पैर स्पर्श करा दूँ, यह तो शास्त्र विरूद्ध है। तब विश्वामित्र जी बोलते हैं तुम ऐसा कर सकते हो क्योंकि यह गुरु आज्ञा है और तुम गुरु के आदेश से ऐसा कर रहे हो । विश्वामित्र जी के कहने से जैसे ही उन्होंने चरण रखा वो चेतन हो गयीं।

वास्तव में जीव में चेतनता चाहे वह कितने कर्त्तव्य का निर्वहन कर ले, चाहे जितना बुद्धि से जी ले, चाहे जितना सेवा कर ले, चेतनता जीव के जीवन में रामजी के स्पर्श से ही आती है। जब तक वह राम जी का भजन नहीं करता तब तक कल्याण नहीं होता। श्रीरामचरितमानस, उत्तर काण्ड में लिखा गया है **"राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा। थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा॥"** आध्यात्मिक अर्थ में सीखिए तो हम लोगों कि बुद्धि भी अहिल्याजी की तरह जड़ हो जाती है। कभी–कभी हम लोग सेवा और धर्म का ही बहाना बनाकर जड़ हो जाते हैं और परमात्मा को भूल बैठते हैं। गोपियाँ भगवान श्रीकृष्ण को इसलिए प्रिय रहीं क्योंकि उन्होंने धर्म को भी त्याग दिया भगवान के लिए और भगवान गीता में कहते हैं मुझे वही सबसे ज्यादा प्रिय है जो मेरे लिए धर्म का भी त्याग कर दे। **"सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः"** धर्म ध्वज धारण करने वाले भगवान स्वयं कह रहे है मेरे लिए धरम का त्याग कर दो। मेरी शरण में आ जाओ में तुम्हारा कल्याण कर दूंगा।

जब अहिल्याजी में चेतनता आ गयी तो उन्होंने भगवान कि स्तुति की। उन्होंने कहा कि क्या कोई मेरे भाग्य की सराहना कर सकता

है ? मैंने भला कौन सी साधना की थी , मुझे तो साक्षात् प्रभु के दर्शन प्राप्त हुए ! यही लाभ तो शंकर भगवान चाहते हैं। वे कहती हैं **"मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना। देखेउँ भरि लोचन हरि भव मोचन इहइ लाभ संकर जाना॥"**

कहने का तात्पर्य यह है की जो ब्रह्मनिष्ठ संत होते हैं उनका वरदान तो वरदान, श्राप भी कल्याणकारी होता है। अब नल नील को देखिये, दोनों लोग बाल्यकाल में बड़े नटखट थे। ऋषि मुनियों का कमंडल जिसमे अभिमंत्रित जल होता था, पूजा सामग्री इत्यादि जाकर नदी में फेंक आया करते थे। उससे पूजा विधि विधान में विघ्न पड़ता था। ऋषियों ने सोचा की ये बालक हैं इनको बहुत कठोर दंड देना उचित नहीं है अतः श्राप यह दिया कि जो भी वस्तु जल में फेंकेंगे वो तैर जाएगी, स्थिर हो जाएगी, डूबेगी नहीं। ये वानर हैं जब कुछ भी डूबेगा नहीं तो परेशान करना बंद कर देंगे तथा कंही और चले जायेंगे। अब देखिये यह श्राप है परन्तु जब सेतु बंधन का समय आया तब हनुमान जी ने बताया कि रघुवर हमारी सेना में ऐसे भी सैनिक हैं जिनके जिम्मे हम सेतु बंधन का सारा काम देने जा रहे हैं। नल, नील जो पत्थर रख देंगे वो डूबेगा ही नहीं। भगवान राम ने कहा इतना बड़ा गुण बताया नहीं इन लोगों ने। तब नल नील सोचे हमें तो श्राप मिला था अब इसको गुण कैसे बताएं। अर्थात ऋषि मुनियों का श्राप भी गुणकारी होता है। इसी प्रकार महर्षि गौतम का इन्द्र को दिया हुआ श्राप भी सफल हुआ जब उन्हें मिथिला में विवाहोत्सव देखने का अवसर मिला।

ऐसे ही गिलहरी कि भी कथा आती है। राम जी के सेतु बंधन में वो भी अपने छोटे छोटे हांथो से योगदान दे आती थी। उसको भी राम जी ने अपनी हथेली पर उठा कर के सहलाया था। ऐसा कहा जाता है कि उनके सहलाने पर ही आज भी पूरी प्रजाति में तीन धारियां पीठ पर पायी जाती हैं।

भगवान सबके हैं, हर वर्ग के हैं। वो किसके नहीं है ? वो सबके हैं। वो रावण के भी हैं। हनुमान जी से उन्होंने कहा

"सो अनन्य जाकी मति असि न टरै हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर स्वामि रूप भगवंत ।"

हनुमान मैं तुम्हे भेज तो रहा हूँ सीता जी का पता लगाने लेकिन उतना कि करना जितना कहा है। मेरा अनन्य भक्त वही है जो यह जानता है कि सारा जगत ही मेरा स्वरुप है। इसी तरह जब उद्धव जी ने सेवक की परिभाषा भगवान से पूछी। भगवान श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया ,

" यावत् सर्वेषु भूतेषु मद्भावो नोऽपजायते।
तावत् एवं उपासीत् वाक् काय दृष्टि वृत्तिभिः।।"

शबरी जी की कथा भी यँहा प्रासंगिक है। भगवान कि यात्रा में सब ऋषियों ने उनका स्वागत करने कि चेष्टा की है और हर जगह भगवान ने बस यही पूछा है कि शबरी मैया कि कुटिया कँहा है। शबरी जी ने भगवान राम की कैसे प्रतीक्षा की है यह हम सब जानते ही हैं। संतों ने अपनी लीला में देखा है की भगवान् ने उनके जूठे बेर खाये हैं।

अब राम जी के स्वभाव से तनिक और परिचित हो जाइये, कितना महान स्वभाव है उनका। विभीषण जब भगवान के पास शरणागति करने आये तो भगवान ने उनको लंका का राजा बना दिया। समुद्र स्नान करवा कर सुशोभित कर दिया राज्यपद पर। तब कुछ वानरों ने शंका व्यक्त करी कि प्रभु आपने अभी लंका को जीता भी नहीं है , अभी तो आप समुद्र तट पर आये हैं केवल, और रघुकुल रीत है कि प्राण जाये पर वचन न जाय। अब आप विभीषण को लंका का राजा बना चुके हैं तो एक बात यह कि यदि आप हार गए रावण से तो आपकी कुल परंपरा नष्ट हो जाएगी और दूसरा प्रश्न यह है कि यदि समय रहते आपके बल पौरुष का भान करके रावण भी आपकी शरण में आ गया, जिस प्रकार से विभीषण आया है तब आप क्या करेंगे ? रावण राज्य–लोलुप है यदि वह आता हैं तो यही सोचेगा कि सुंग्रीव को राज्य दिया आपने, विभीषण को दिया और वो स्वयं जिसने लंका जैसे बड़े राज्य का शासन किया है, जो राज्य–सुख का भोगी है उसे आप क्या देंगे ? भगवान राम पहले प्रश्न का उत्तर देते हुए अपने कौशल और क्षमता के बारे में कुछ नहीं कहते हैं बस लखनलाल जी की ओर देखते हैं और समझाते हैं कि ये केवल मेरे निदेश मात्र से त्रिभुवन का नाश कर सकते हैं तो हार का तो प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसी क्षमता लखनलाल जी में है। दूसरा, उन्होंने कहा कि देखो रावण की लंका तो मैंने विभीषण को दे दी अब यदि वह भी शरणागत हो गया तो आप लोग संभवतः भूल चुके हैं कि अयोध्या के राजपद पर मेरी पादुकाएं शासन कर रही हैं, जिस अयोध्या पर चक्रवर्ती राजाओं ने शासन किया है वो अयोध्या मैं रावण को दे दूंगा। सारी जनता रोने लगी। ऐसे हैं प्रभु श्रीराम। प्रभु क्या नहीं दे सकते हैं ! रावण को जो लंका मिली थी वो ऐसे नहीं मिली थी, "सिर सरोज निज करन्हि उतारी। पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी" यह रावण का पराक्रम था।

लोग एक लोटा जल भगवान् शंकर को नहीं चढ़ाते हैं यँहा और रावण ने अपने सर को काट कर के उसी को पुष्प समझ करके अनंत बार भगवान् का अभिनन्दन किया, उन सिर रुपी पुष्पों कि माला चढ़ा देता था भगवान् के चरणों में। शिल्पकार विश्वकर्मा जी के द्वारा बनाई गयी सोने कि लंका तप करने पर दशानन को मिली थी। लंका निःशुल्क नहीं मिली थी, यह उसके तप का प्रभाव था। जो लंका इतना तप करने पर रावण को मिली वो भगवान राम ने विभीषण जी को ऐसे ही दे दी वो भी संकोच में कंही कम तो नहीं दे रहा हूँ। "मोर दरसु अमोघ जग माहीं" मैं समस्त इच्छाएं पूरी कर देता हूँ, ऐसे हैं प्रभु श्रीराम ! भगवान ने यह भी नहीं सोचा कि भगवान् शंकर क्या सोचेंगे।

"जो संपति सिव रावनहि, दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा बिभीषनहि, सकुचि दीन्हि रघुनाथ॥"

ऐसे अद्भुत भगवान राम जी का भजन सबको करना चाहिए। प्रभु हम सबके हैं , प्रत्येक प्राणी मात्र में उनका निवास हैं। जन जन के राम हैं। राम के भजन से सब पूजन हो जाता है। कहा गया है –**"रामहिभजहिंतेचतुरनर"**।

किसान, कृषि एवं विकसित भारत

डॉ0 परमेन्द्र सिंह

प्राचीन काल से ही भारत की अर्थव्यवस्था में किसानों एवं कृषि का बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है स भारतीय कृषि राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक के साथ आध्यात्मिक उन्नत का बहुत बड़ा केंद्र रही हैस इसलिए भारतीय कृषि को लोग ऋषि परंपरा की दिन मानते हैंस जहां सबके कल्याण के लिए ”सर्वे भवंतु सुखिंनाः , सर्वे संतु निरामया” के विचार से प्रेरित होकर के समाज के अंतिम पक्ति के अंतिम व्यक्ति को दो समय की रोटी और तन ढकने को कपड़ा मिले, ऐसा प्रत्येक भारतीय चिंतक का मानना है स कृषि भारत की संस्कृति एवं सभ्यता है तो किसान उसकी आत्मा स इसलिए भारत के लोग कृषि एक उत्सव के रूप में मनाते हैं और उत्सव ऐसा जिसमें पर्यावरण एवं प्रकृति की रक्षा एवं सुरक्षा का दायित्व निर्वहन करने की सोच, जहाँ वृक्ष, नदी, पहाड़, झरने समुद्र, जीव –जंतु, पशुधन यहां तक की सूक्ष्मजीवियों के यथोचित एवं समन्वयी सहचर्य से उनके साथ–साथ अपना भी जीवन चले ऐसी कल्पना रही है स 2011 के जनगणना के अनुसार लगभग 60þ आबादी कृषि और उससे संबंधित कार्यों से अपनी जीविकोपार्जन कर रही हैस वर्ष 1950– 51 में भारत की जीडीपी में कृषि का लगभग 52 प्रतिशत योगदान था स केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय के अनुसार वर्ष 2016–17 में कृषि और संबंधित क्षेत्र का योगदान गिरकर 17.4 प्रतिशत रह गया था, जो कि वर्तमान में 16 प्रतिशत के आस–पास रह गया है जो की चिंता का विषय है स विदित हो कि, कोविड –19 की महामारी के बावजूद 3.4 प्रतिशत की वृद्धि दर के साथ कृषि क्षेत्र ने भारतीय अर्थव्यवस्था को ऊपर पहुंचा था आज भारत जिस तरह से बहुत ही तेजी से वैश्विक पटल पर समस्त क्षेत्र में(विदेश नीति, रक्षा,सुरक्षा,तकनीकी, विज्ञान, अंतरिक्ष, शिक्षा, चिकित्सा इत्यादि) बहुत तेजी से उभरते हुए विकसित भारत बनने में तेजी से अग्रसर है। वैसे ही भारत के किसानों एवं कृषि क्षेत्र से जुड़े लोगों के ऊपर भारत को विकसित बनाने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने की जिम्मेवारी है स जब–जब इस देश को एक दिशा देने की आवश्यकता हुई है, इस देश के किसानों ने उसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, चाहे आजादी के आंदोलन में बिहार के चंपारण में किसानों का आंदोलन या फिर 1928 का किसानों का ”बारदोली सत्याग्रह” इसके उदाहरण है आज भी देश की अर्थव्यवस्था में खेती के योगदान के लगातार घटने के बावजूद लगभग 60þ से अधिक लोगों को रोजगार कृषि क्षेत्र से उपलब्ध हो रहा हैस देश में खेती के जोत का औसत आकार 1.15 हेक्टर है, जो कि घटता जा रहा हैस जबकि लघु एवं सीमांत भूस्वामीत्व 2 हैकटेयर कम है और यह लगभग 72 प्रतिशत है स भारत में छोटे एवं सीमांत किसानों संख्या बहुत ही अधिक अधिक है जिनकी मोल भाव करने की शक्तियां बहुत ही कम है स जिससे किसान खुद को बाजार एवं बिचौलियों के बीच फसा पाता हैंस देश में कृषि बाजार की अनुपलब्धता एवं उसका स्वरूप भी भारत के किसानों के आर्थिक गुलामी का एक बहुत बड़ा कारण हैस आज देश का किसान बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बीज, उर्वरक एवं दवाओं के ऊपर तेजी से आश्रित होता जा रहा है स जो किसानों की मेहनत की कमाई का एक बहुत बड़ा हिस्सा प्राइवेट कंपनियां पाले में जा रहा हैं स भारत में लगभग 60þ क्षेत्र पर वर्षा आधारित खेती होती है, जबकि मात्र 40þ क्षेत्र में सिंचित खेती होती है, या ये कहिए कि, 40þ खेतों पर ही सिंचाई के साधन उपलब्ध हैंस देश में किसानों को जितना उपज का मूल्य मिलना चाहिए, वह आज भी नहीं मिल रहा है स आज भी उनको अत्यधिक दर पर ऋण मिलता हैस वहीं दूसरी तरफ जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण असंतुलन के कारण अत्यधिक वर्षा, कम वर्षा, अत्यधिक गर्मी, कम गर्मी एवं तापक्रम का अचानक तेजी से बढ़ाना, भारत ही नहीं, वैश्विक स्तर पर किसानों एवं कृषि क्षेत्र के लिए एक अलग चुनौती के रूप में खड़ी हुई है स वित्तीय वर्ष 2023 तक वैश्विक महामारी एवं रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध ने वैश्विक आपूर्ति प्रणालियों को अस्त–व्यस्त कर दिया खाद्य ईंधन और उर्वरकों की कीमतों में तेजी से वृद्धि के साथ महंगाई का दबाव बढ़ास इन समस्त विषम परिस्थितियों में देश का किसान भारत को ”विकसित भारत” बनाने के लिए संकल्पबद्ध होते हुए निरंतर कार्य कर रहा है स देश के अन्नदाता किसानों ने अपनी मेहनत के बल पर 330.5 मिलियन टन का शानदार

आज भारत जिस तरह से बहुत ही तेजी से वैश्विक पटल पर समस्त क्षेत्र में(विदेश नीति, रक्षा, सुरक्षा, तकनीकी, विज्ञान, अंतरिक्ष, शिक्षा, चिकित्सा इत्यादि) बहुत तेजी से उभरते हुए विकसित भारत बनने में तेजी से अग्रसर है

उत्पादन किया स जिसमें 303 मिलियन टन अनाज एवं 27.5 मिलियन टन दलहन का उत्पादन रहा स गन्ना उत्पादन में रिकॉर्ड 494.2 मिलियन टन, जबकि तिलहन उत्पादन सर्वकालिक उच्च 41 मिलियन टन रहास बागवानी की बात करें तो बागवानी के क्षेत्र में 350.9 मिलियन टन उत्पादन रहा जिसमें फलों का उत्पादन 107.7 मिलियन टन एवं सब्जियों का उत्पादन 212.5 मिलियन टन के साथ आलू के उत्पादन में 6.2þ का उछाल आया स श्रीअन्न (मोटे अनाज) की हम बात करें तो भारत 12.49 मेट्रिक टन उत्पादन करके दुनिया का सबसे अधिक श्रीअन्न उत्पादन करने वाला देश है स भारत आज दूध,दाल, चाय, मसाले, जुट,काजू के उत्पादक में दुनिया के देश बनकर उभरा है, वहीं चावल गेहूं तिलहन, फल, सब्जी और कपास में दूसरे सबसे बड़े उत्पादक देश के रूप में शीर्ष पर है। पिछले एक दशक में केंद्र सरकार ने किसानों एवं कृषि की उपरोक्त समस्त समस्याओं को समझते हुए कुछ नीतिओ एवं कार्यक्रमो पर कार्य कर रही है,जो की सराहनीय है स लेकिन इस दिशा में और अधिक कार्य करने आवश्यकता हैस प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत देशभर के सभी भूमि धारक किसानों के परिवार को कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों के साथ घरेलू जरूरत से संबंधित खर्च को वहन करने हेतु प्रतिवर्ष ₹6000 की आर्थिक सहायता प्रदान करती है वही किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) के माध्यम से किसान सामूहिक रूप से अपने उत्पादन को बढ़ाएं एवं उसका उचित मूल्य ले सकेंस प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के माध्यम से आंधी, ओलावृष्टि, तेज बारिश, प्राकृतिक आपदाओं के कारण नष्ट हो रही फसलों को डेढ़ से दो प्रतिशत के प्रीमियम भुगतान देकर बहुत बड़ी राहत प्रदान की है स वहीं किसान क्रेडिट कार्ड योजना के तहत भारत सरकार मात्र तीन प्रतिशत ब्याज की दर से किसानों को अचानक धन की आवश्यकता होने पर ऋण लेने की सुविधा प्रदान कर रही हैस प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना के तहत नौकरी पेशा करने वाले लोगों की तरह किसानों के लिए पेंशन की सौगात दी है जिसमें किसानों को 55 रुपए से लेकर के ₹200 तक प्रतिमा 60 वर्ष की आयु तब जमा करना होता है जैसे ही किसान अपनी 60 वर्ष की आयु पूर्ण करेगा उसकी पेंशन मिलनी शुरू हो जाएगीस श्याम किसान योजना के तहत किसानों को नए उपकरण एवं यंत्र खरीदने हेतु सरकार द्वारा छूट प्रदान की जाती है सरकार ने डेयरी उद्यमिता विकास योजना के तहत किसानों को अपनी आय बढ़ाने हेतु एवं अच्छी मात्रा में दुग्ध उत्पादन करने हेतु अनुदान प्रदान किए जाने का प्रावधान है स तो इतना ही नहीं सरकार ने पशुधन बीमा योजना के तहत दुधारू मवेशियों एवं पशु कब बीमा 50þ अनुदान देकर सरकार कर रही हैस सरकार ने राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन को आगे बढ़ाने के लिए मीठी क्रांति के लक्ष्य को रखा हैस राष्ट्रीय सुरक्षा मिशन योजना के तहत सरकार गेहूं, चावल, दलहन, की उत्पादकता में वृद्धि करना चाहती है ताकि देश में खाद्य सुरक्षा की स्थिति को सुनिश्चित किया जा सकेस स्वायल हेल्थ कार्ड योजना के माध्यम से सरकार खेतों में खाद/ उर्वरक की जानकारी किसानों को दे रही है जबकि जैविक खेती योजना के माध्यम से परंपरागत कृषि विकास की योजनाओं की शुरुआत के साथी प्राकृतिक खेती करके पर्यावरण असंतुलन एवं जलवायु परिवर्तन को काम करते हुए किसानों एवं मानव स्वास्थ्य को ठीक रखा जा सके ऐसा प्रयास किया जा रहा है स कुल मिलाकर खाने का आशय यह है कि किसानों कि उपरोक्त समस्त समस्याओं को ध्यान रखकर के सरकार की तरफ से योजनाएं चलाई जा रही हैं लेकिन समस्त योजनाएं विकसित भारत बनाने के निमित्त पर्याप्त नहीं है सरकार की तरफ से और नई–नई योजना एवं इन योजनाओं को और प्रभावी बनाने की आवश्यकता हैस निश्चित रूप से भारत "विकसित भारत" होकर पूरे विश्व को "वसुधैव कुटुंबकम" की विचार से प्रेरणा लेकर, नया नेतृत्व एवं आयाम प्रदान करेगा स जिसमें किसानों एवं कृषि की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

भाजपा को जनता का मुक्त हस्त आर्शिवाद : तावड़े

भारतीय जनता पार्टी की लोकसभा चुनाव योजना बैठक में गुरुवार को आगामी संगठनात्मक तथा चुनावी कार्ययोजना पर मंथन हुआ। राजधानी लखनऊ में आयोजित योजना बैठक में पार्टी के कार्यक्रम व अभियानो के साथ ही मिशन 2024 की निश्चित सफलता की रणनीति पर चर्चा हुई। प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी की अध्यक्षता तथा प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री विनोद तावड़े, उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य व श्री ब्रजेश पाठक, प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह तथा प्रदेश सहप्रभारी श्री संजीव चौरसिया की उपस्थिति में बैठक आयोजित की गयी। बैठक में पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री रमापति राम त्रिपाठी, श्री सूर्य प्रताप शाही तथा श्री स्वतंत्र देव सिंह उपस्थित रहे। बैठक का संचालन प्रदेश महामंत्री श्री गोविन्द नारायण शुक्ल ने किया।

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सेवा, सुशासन व गरीब कल्याण से आत्मनिर्भर भारत निर्माण का संकल्प पूर्ण हो रहा है। देश आर्थिक, सामरिक व सांस्कृतिक उत्थान के साथ सम्पूर्ण विश्व का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

उत्तर प्रदेश की पहचान कभी दंगा प्रदेश के रूप में होती थी आज वही उत्तर प्रदेश की धरती डबल इंजन की सरकार में भयमुक्त, दंगामुक्त, खुशहाल तथा हर्ष और उल्लास के साथ उत्सव प्रदेश हो गयी है। उत्तर प्रदेश से 80 लोकसभा सीटे जीतने का लक्ष्य पूर्ण करके माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना है। उन्होंने कहा कि केन्द्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के साथ ही सरकार के निर्णय व संगठन की विचारधारा को जनमानस के बीच लेकर सम्पर्क व संवाद की भाजपा परम्परा के अनुसार काम करना है। भाजपा कार्यकर्ता परिश्रम का पर्याय हैं और किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम है।

पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश तीसरी बार भाजपा को चुनने जा रहा है। इस सरकार गठन में उत्तर प्रदेश की शत प्रतिशत भागीदारी के लिए संगठन की प्रदेश इकाई मजबूती के साथ संकल्पित है। उन्होंने कहा कि मोदी जी व योगी जी के रूप में कुशल नेतृत्व और भाजपा कार्यकर्ताओं का अनुशासन व परिश्रम जीत की गारन्टी है। पार्टी द्वारा लोकसभा चुनाव की तैयारियां प्रारम्भ हो चुकी है, ऐसे में हमारी सक्रियता भी बढेगी। उन्होंने कहा कि सपा–बसपा व कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दल जहां एक ओर गठजोड के लिए जद्दोजहद कर रहे है। वहीं हमें बूथ विजय का लक्ष्य लेकर प्रत्येक बूथ पर विजय की रणनीति पर काम करना है। केन्द्रीय नेतृत्व को संगठन की प्रदेश इकाई प्रत्येक अभियान व कार्यक्रम के प्रभावी तथा परिणाम केन्द्रित क्रियान्वयन के लिए आश्वस्त करती है।

पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री विनोद तावड़े ने कहा कि उत्तर प्रदेश की सम्मानित जनता ने गांव, नगर की सरकार से केन्द्र की सरकार तक भारतीय जनता पार्टी को मुक्तहस्त से आशीर्वाद दिया है। उन्होंने कहा कि लाभार्थी सम्पर्क के माध्यम से हमें प्रत्येक लाभार्थी की दहलीज पर पहुंचकर सम्पर्क व संवाद स्थापित करना है। इसके साथ ही गांव चलो अभियान में पार्टी के प्रत्येक पदाधिकारी गांव में पहुंचकर ग्रामीणों से सम्पर्क करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की केन्द्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं, राजनैतिक दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ के लिए गए ऐतिहासिक निर्णयों पर चर्चा करेगें। उन्होंने कहा कि गांव चलो अभियान के तहत गांव में रात्रि प्रवास करके चौपालों पर संवाद भी स्थापित करना है। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत उत्तर प्रदेश में लोकसभा क्षेत्रों के समूह को 20 कलस्टरो में केन्द्रित करके कार्ययोजना तैयार करना है।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने संगठनात्मक कार्ययोजना प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रदेश से लेकर बूथ तक के प्रत्येक पदाधिकारी को पन्ना प्रमुख की जिम्मेदारी दी जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक लोकसभा व विधानसभा क्षेत्र में पहुंचे विस्तारक संगठनात्मक कार्यों में सहयोग कर रहे है। उन्होंने कहा कि आगामी 24 जनवरी को नवमतदाता अभियान के तहत पहली बार मतदान करने वाले नवमतदाताओं से सम्पर्क व संवाद के कार्यक्रम तय किये गए है, प्रत्येक विधानसभा में दो नवमतदाता सम्मेलन आयोजित किये जाएगें तथा प्रत्येक कॉलेज कैम्पस तथा हॉस्टल में भी युवाओं से सम्पर्क की योजना तय की गयी है। श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि पार्टी ने प्रत्येक बूथ पर वॉलराइटिंग का कार्य भी प्रारम्भ कर दिया है। बूथ शक्तिकरण अभियान के तहत पार्टी प्रदेश के सभी बूथों पर मजबूत संरचना के द्वारा अभेद्य दुर्ग का निर्माण करेगी। बूथ समितियां बूथ पर संगठनात्मक जनसम्पर्क के साथ ही मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करने का काम करेगीं तथा मतदान पूर्ण होने तक बूथ पर मुस्तैदी के साथ दायित्व का निर्वहन करेगी।

हमारा उद्देश्य सत्ता हासिल करना नहीं, बल्कि गरीबों की सेवा करना : नड्डा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 16 दिसंबर, 2023 को हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर में अभिनंदन समारोह को संबोधित किया। इसके पश्चात उन्होंने सुंदरनगर में जिला भाजपा कार्यालय का उद्घाटन किया और वहां एक भव्य रोड शो को करने के साथ-साथ एक कार्यक्रम को भी संबोधित किया। बिलासपुर में आयोजित अभिनंदन कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री श्री अनुराग ठाकुर, पूर्व मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर, हिमाचल प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष श्री राजीव बिंदल एवं पार्टी के अन्य नेतागण उपस्थित रहे।

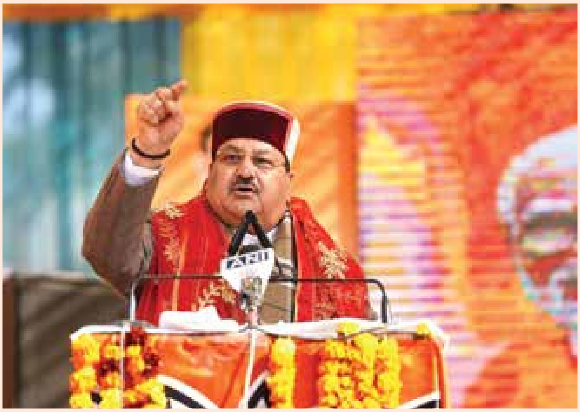

श्री नड्डा ने तंज कसते हुए कहा कि मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भाजपा की शानदार जीत ने तथाकथित राजनीतिक पंडितों को भी स्तब्ध कर दिया है। वो सोचते हैं कि मीडिया में तो खबरें चल रहीं थी कि छत्तीसगढ़ में भाजपा गई, मध्य प्रदेश भाजपा से संभला नहीं और राजस्थान में शायद भाजपा पटखनी खा जाए, लेकिन तीन दिसंबर को आए नतीजों में जब एक के बाद एक तीनों राज्यों में भाजपा की सरकार बनी तो इन राजनीतिक पंडितों के दिमाग चकरा गए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राजनीति की संस्कृति बदल डाली है। अब वो संस्कृति नहीं है कि नेता वादा कर भूल जाएं और पांच साल बाद फिर से नए वादे करके वोट ले जाएं। उन्होंने जनता को याद दिलाया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जो कहा था, वो किया है और जो नहीं कहा था वो भी करके दिया है। आज जनता रिपोर्ट कार्ड की राजनीति पर विश्वास करती है। इसीलिए विश्व भर में ये स्थापित हो गया है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी, गारंटी के पूरी होने की भी गारंटी है।

विश्व भर में ये स्थापित हो गया है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी, गारंटी के पूरी होने की भी गारंटी है

उन्होंने कहा कि 'आयुष्मान भारत' योजना के तहत 10 करोड़ 74 लाख परिवार, भारत की 40 प्रतिशत आबादी को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 5 लाख रुपए तक की स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान की।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 80 करोड़ जनता को 5 किलो गेहूं-चावल और 1 किलो दाल निःशुल्क पहुंचाया है। देश में आज 13.5 करोड़ लोग गरीबी रेखा से ऊपर आ गए हैं और अति गरीबी की दर भी 1 प्रतिशत से भी कम है, यह है मोदीजी की गारंटी। कोरोना के समय महिलाओं को सीधे बैंक के माध्यम से 500 रुपए की सहायता राशि पहुंचाई थी। लंबे समय से महिला अधिनियम बिल संसद में लटका हुआ था, सरकारें आईं और गईं लेकिन कोई इसे पारित नहीं कर पाया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' के माध्यम से महिलाओं को लोकसभा एवं विधानसभा में 33 प्रतिशत का आरक्षण प्रदान कर महिलाओं को सशक्त किया गया है।

उन्होंने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि देश में विकास होने से और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगने से काले धन वाले लोगों को समस्या तो होगी ही। जहां लोकसभा के वोटों की गिनती एक दिन में पूरी हो जाती हैं, वहीं विपक्ष के नेताओं की अलमारी से इतनी नगदी निकलती है कि नोटों की गिनती 3-4 दिन में भी पूरी नहीं हो पाती। ये कांग्रेस की भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति है। हिमाचल प्रदेश की कांग्रेस सरकार पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस के एक साल के शासन में ही हिमाचल के लोगों को काफी भ्रष्टाचार झेलना पड़ा है। उन्होंने हिमाचल प्रदेश की जनता का धन्यवाद देते हुए कहा कि आपने मेरा अभिनंदन किया, लेकिन ये अभिनंदन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का है। ये अभिनंदन राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश की जनता का है। उन्होंने मिजोरम और तेलंगाना में भाजपा का वोट शेयर बढ़ाने के लिए भी जनता के प्रति आभार व्यक्त किया। तेलंगाना में भाजपा का वोट प्रतिशत 7 से बढ़कर 14 प्रतिशत हुआ है और भाजपा की सीट एक सीट बढ़कर आठ हो गयी है। मिजोरम में भाजपा के विधायकों की संख्या 1 से दो हुई है। आने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा तेलंगाना में सरकार बनाएगी।

श्री नड्डा ने कहा कि हमारा उद्देश्य सत्ता हासिल करना नहीं, बल्कि गरीबों की सेवा करना और उन्हें ताकत देना है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश में अभूतपूर्व बदलाव हुए हैं, सड़क और हाइवे का विकास हुआ है। इस विकास को आगे बढ़ाने के लिए हमें अपनी पूरी ताकत लगाकर विरोधियों को भी साथ लेकर भाजपा सरकार को वापस लाना है और श्री नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाना है। ■

“‘राष्ट्र प्रथम’” मूल मंत्र

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। ‘मन की बात’ यानि आपके साथ मिलने का एक शुभ अवसर, और अपने परिवारजनों के साथ जब मिलते हैं, तो वो, कितना सुखद होता है, कितना संतोषदायी होता है। ‘मन की बात’ के द्वारा आपसे मिलकर, मैं, यही अनुभुति करता हूँ, और आज तो, हमारी साझा यात्रा का ये 108वाँ एपिसोड है। हमारे यहाँ 108 अंक का महत्व, उसकी पवित्रता, एक गहन अध्ययन का विषय है। माला में 108 मनके, 108 बार जप, 108 दिव्य क्षेत्र, मंदिरों में 108 सीढ़ियाँ, 108 घंटियाँ, 108 का ये अंक असीम आस्था से जुड़ा हुआ है। इसलिए ‘मन की बात’ का 108वाँ episode मेरे लिए और खास हो गया है। इन 108 episodes में हमने जनभागीदारी के कितने ही उदाहरण देखे हैं, उनसे प्रेरणा पाई है। अब इस पड़ाव पर पहुँचने के बाद, हमें नए सिरे से, नई ऊर्जा के साथ और तेजगति से, बढ़ने का, संकल्प लेना है। और ये कितना सुखद संयोग है कि कल का सूर्योदय, 2024 का, प्रथम सूर्योदय होगा – हम वर्ष 2024 में प्रवेश कर चुके होंगे। आप सभी को 2024 की बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

मन की बात की 108वीं कड़ी

साथियो, ‘मन की बात’ सुनने वाले कई लोगों ने मुझे पत्र लिखकर अपने यादगार पल साझा किए हैं। ये 140 करोड़ भारतीयों की ताकत है, कि इस वर्ष, हमारे देश ने, कई विशेष उपलब्धियाँ हासिल की हैं। इसी साल ‘नारी शक्ति वंदन अधिनियम’ पास हुआ, जिसकी प्रतीक्षा बरसों से थी। बहुत सारे लोगों ने पत्र लिखकर, भारत के 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने पर, खुशी जाहिर की। अनेक लोगों ने मुझे G20 नउउपज की सफलता याद दिलाई। साथियो, आज भारत का कोना–कोना, आत्मविश्वास से भरा हुआ है, विकसित भारत की भावना से, आत्मनिर्भरता की भावना से, ओत–प्रोत है। 2024 में भी हमें इसी भावना और momentum को बनाए रखना है। दिवाली पर record कारोबार ने ये साबित किया कि हर भारतीय ‘Vocal For Local’ के मंत्र को महत्व दे रहा है।

साथियो, आज भी कई लोग मुझे चंद्रयान–3 की सफलता को लेकर सन्देश भेजते रहे हैं। मुझे विश्वास है कि मेरी तरह, आप भी, हमारे वैज्ञानिकों और विशेषकर महिला वैज्ञानिकों को लेकर गर्व का अनुभव करते होंगे।

साथियो, जब नाटू–नाटू को Oscar मिला तो पूरा देश खुशी से झूम उठा। ‘The Elephant Whisperers’ को सम्मान की बात जब सुनी तो कौन खुश नहीं हुआ। इनके माध्यम से दुनिया ने भारत की creativity को देखा और पर्यावरण के साथ हमारे जुड़ाव को समझा। इस साल sports में भी हमारे एथलीटों ने जबरदस्त प्रदर्शन किया। Asian Games में हमारे खिलाड़ियों ने 107 और Asian Para Games में 111 medal जीते। Cricket World Cup में भारतीय खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन से सबका दिल जीत लिया। Under-19 T-20 World Cup में हमारी महिला क्रिकेट टीम की जीत बहुत प्रेरित करने वाली है। कई खेलों में खिलाड़ियों की उपलब्धियों ने देश का नाम बढ़ाया। अब 2024 में Paris Olympic का आयोजन होगा, जिसके लिए पूरा देश अपने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ा रहा है।

साथियो, जब भी हमने मिलकर प्रयास किया, हमारे देश की विकास यात्रा पर बहुत सकारात्मक प्रभाव हुआ। हमने

'आजादी का अमृत महोत्सव' और 'मेरी माटी मेरा देश' ऐसे सफल अभियान का अनुभव किया। इसमें करोड़ों लोगों की भागीदारी के हम सब साक्षी हैं। 70 हज़ार अमृत सरोवरों का निर्माण भी हमारी सामूहिक उपलब्धि है।

साथियो, मेरा ये विश्वास रहा है कि जो देश Innovation को महत्व नहीं देता, उसका विकास रुक जाता है। भारत का Innovation Hub बनना, इस बात का प्रतीक है कि हम रुकने वाले नहीं हैं। 2015 में हम Global Innovation Index में 81वें तंदा पर थे – आज हमारी तंदा 40 है। इस वर्ष भारत में फाइल होने वाले patents की संख्या ज्यादा रही है, जिसमें करीब 60% domestic निदके के थे। QS Asia University Ranking में इस बार सबसे अधिक संख्या में भारतीय university शामिल हुई है। अगर इन उपलब्धियों की सपेज बनाना शुरू करें तो ये कभी पूरी ही नहीं होगी। ये तो सिर्फ झलक है, भारत का सामर्थ्य कितना प्रभावी है – हमें देश की इन सफलताओं से, देश के लोगों की इन उपलब्धियों से, प्रेरणा लेनी है, गर्व करना है, नए संकल्प लेने हैं। मैं एक बार फिर, आप सबको, 2024 की शुभकामनाएं देता हूँ।

किया। मैं मंच से हिंदी में संबोधन कर रहा था लेकिन AI Tool भाषिणी की वजह से वहां मौजूद तमिलनाडु के लोगों को मेरा वही संबोधन उसी समय तमिल भाषा में सुनाई दे रहा था। काशी–तमिल संगमम में आए लोग इस प्रयोग से बहुत उत्साहित दिखे। वो दिन दूर नहीं जब किसी एक भाषा में संबोधन हुआ करेगा और जनता Real Time में उसी भाषण को अपनी भाषा में सुना करेगी। ऐसा ही फिल्मों के साथ भी होगा जब जनता सिनेमा हॉल में AI की मदद से Real Time Translation सुना करेगी। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि जब ये Technology हमारे स्कूलों, हमारे अस्पतालों, हमारी अदालतों में व्यापक रूप से इस्तेमाल होने लगेगी, तो कितना बड़ा परिवर्तन आएगा। गढ़वा जिले के मंगलो गांव में बच्चों को कुडुख भाषा में शिक्षा दी जा रही है। इस स्कूल का नाम है, 'कार्तिक उराँव आदिवासी कुडुख स्कूल'। इस स्कूल में 300 आदिवासी बच्चे पढ़ते हैं। कुडुख भाषा, उरांव आदिवासी समुदाय की मातृभाषा है। कुडुख भाषा की अपनी लिपि भी है, जिसे 'तोलंग सिकी' नाम से जाना जाता है। ये भाषा धीरे–धीरे विलुप्त होती जा रही थी, जिसे बचाने के लिए इस समुदाय ने

मेरे परिवारजनों, हमने अभी भारत को लेकर हर तरफ जो आशा और उत्साह है उसकी चर्चा की – ये आशा और उम्मीद बहुत अच्छी है। जब भारत विकसित होगा तो इसका सबसे अधिक लाभ युवाओं को ही होगा। लेकिन युवाओं को इसका लाभ तब और ज्यादा मिलेगा, जब वो Fit होंगे। आजकल हम देखते हैं कि Lifestyle related Diseases के बारे में कितनी बातें होती हैं, यह हम सभी के लिए, खासकर युवाओं के लिए, ज्यादा चिंता की बात है। इस 'मन की बात' के लिए मैंने आप सभी से Fit India से जुड़े Input भेजने का आग्रह किया था। आप लोगों ने जो Response दिया, उसने मुझे उत्साह से भर दिया है। NaMo App पर बड़ी संख्या में मुझे Startups ने भी अपने सुझाव भेजे हैं, उन्होंने, अपने कई तरह के अनूठे प्रयासों की चर्चा की है।

मेरे परिवारजनों, कुछ दिन पहले काशी में एक Experiment हुआ था, जिसे मैं 'मन की बात' के श्रोताओं को जरुर बताना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि काशी–तमिल संगमम में हिस्सा लेने के लिए हजारों लोग तमिलनाडु से काशी पहुंचे थे। वहां मैंने उन लोगों से संवाद के लिए Artificial Intelligence AI Tool भाषिणी का सार्वजनिक रूप से पहली बार उपयोग

अपनी भाषा में बच्चों को शिक्षा देने का फैसला किया है। इस स्कूल को शुरु करने वाले अरविन्द उरांव कहते हैं कि आदिवासी बच्चों को अंग्रेजी भाषा में दिक्कत आती थी इसलिए उन्होंने गांव के बच्चों को अपनी मातृभाषा में पढ़ाना शुरू कर दिया। उनके इस प्रयास से बेहतर परिणाम मिलने लगे तो गांव वाले भी उनके साथ जुड़ गए। अपनी भाषा में पढ़ाई की वजह से बच्चों के सीखने की गति भी तेज हो गई। हमारे देश में कई बच्चे भाषा की मुश्किलों की वजह से पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते थे। ऐसी परेशानियों को दूर करने में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति से भी मदद मिल रही है। हमारा प्रयास है कि भाषा, किसी भी बच्चे की शिक्षा और प्रगति में बाधा नहीं बननी चाहिए।

साथियो, हमारी भारतभूमि को हर कालखंड में देश की विलक्षण बेटियों ने गौरव से भर दिया है। सावित्रीबाई फुले जी और रानी वेलु नाचियार जी देश की ऐसी ही दो विभूतियाँ हैं। उनका व्यक्तित्व ऐसे प्रकाश स्तम्भ की तरह है, जो हर युग में नारी शक्ति को आगे बढ़ाने का मार्ग दिखाता रहेगा। आज से कुछ ही दिनों बाद, 3 जनवरी को हम सभी इन दोनों की जन्म–जयंती मनाएंगे। सावित्रीबाई फुले जी का नाम आते ही सबसे पहले

शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में उनका योगदान हमारे सामने आता है। वे हमेशा महिलाओं और वंचितों की शिक्षा के लिए जोरदार तरीके से आवाज उठाती रहीं। वे अपने समय से बहुत आगे थीं और उन गलत प्रथाओं के विरोध में हमेशा मुखर रहीं। शिक्षा से समाज के सशक्तिकरण पर उनका गहरा विश्वास था। महात्मा फुले जी के साथ मिलकर उन्होंने बेटियों के लिए कई स्कूल शुरू किए। उनकी कवितायें लोगों में जागरूकता बढ़ाने और आत्मविश्वास भरने वाली होती थीं। लोगों से हमेशा उनका यह आग्रह रहा कि वे जरुरत में एक–दूसरे की मदद करें और प्रकृति के साथ भी समरसता से रहें। वे कितनी दयालु थीं, इसे शब्दों में नहीं समेटा जा सकता। जब महाराष्ट्र में अकाल पड़ा तो सावित्रीबाई और महात्मा फुले ने जरुरतमंदों की मदद के लिए अपने घरों के दरवाजे खोल दिए। सामाजिक न्याय का ऐसा उदाहरण विरले ही देखने को मिलता है। जब वहां प्लेग का भय व्याप्त था तो उन्होंने खुद को लोगों की सेवा में झोंक दिया। इस दौरान वे खुद इस बीमारी की चपेट में आ गईं। मानवता को समर्पित उनका जीवन आज भी हम सभी को प्रेरित कर रहा है।

तमिलनाडु के मेरे भाई–बहन आज भी उन्हें वीरा मंगई यानि वीर नारी के नाम से याद करते हैं। अंग्रेजों के खिलाफ़ रानी वेलु नाचियार जिस बहादुरी से लड़ीं और जो पराक्रम दिखाया, वो बहुत ही प्रेरित करने वाला है। अंग्रेजों ने शिवगंगा साम्राज्य पर हमले के दौरान उनके पति की हत्या कर दी थी, जो वहां के राजा थे। रानी वेलु नाचियार और उनकी बेटी किसी तरह दुश्मनों से बच निकली थीं। वे संगठन बनाने और मरुदु Brothers यानि अपने कमांडरों के साथ सेना तैयार करने में कई सालों तक जुटी रहीं। उन्होंने पूरी तैयारी के साथ अंग्रेजों के खिलाफ़ युद्ध शुरू किया और बहुत ही हिम्मत और संकल्प–शक्ति के साथ लड़ाई लड़ी। रानी वेलु नाचियार का नाम उन लोगों में शामिल है जिन्होंने अपनी सेना में पहली बार All&Women Group बनाया था। मैं इन दोनों वीरांगनाओं को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ।

मेरे परिवारजनों, गुजरात में डायरा की परंपरा है। रात भर हजारों लोग डायरा में शामिल हो करके मनोरंजन के साथ ज्ञान को अर्जित करते हैं। इस डायरा के एक प्रसिद्द कलाकार हैं भाई जगदीश त्रिवेदी जी। हास्य कलाकार के रूप में भाई जगदीश त्रिवेदी जी ने 30 साल से भी ज्यादा समय से अपना प्रभाव जमा रखा है। हाल ही में भाई जगदीश त्रिवेदी जी का मुझे एक पत्र मिला और साथ में उन्होंने अपनी एक किताब भी भेजी है। किताब का नाम है – Social Audit of Social Service (सोशल ऑडिट ऑफ़ सोशल सर्विस)। ये किताब बड़ी अनूठी है। इसमें हिसाब किताब है, ये किताब एक तरह की Balance Sheet है। पिछले 6 सालों में भाई जगदीश त्रिवेदी जी को किस–किस कार्यक्रम से कितनी आय हुई और वो कहाँ–कहाँ खर्च हुआ, इसका पूरा लेखा–जोखा किताब में है। उन्होंने अपनी पूरी आय, एक–एक रुपया समाज के लिए – School, Hospital, Library, दिव्यांग जनों से जुड़ी संस्थाओं, समाज सेवा में खर्च कर दिया – पूरे 6 साल का हिसाब है। जैसे किताब में एक स्थान पर लिखा है 2022 में उनको अपने कार्यक्रमों से आय हुई दो करोड़ पैंतीस लाख उन्यासी हजार छः सौ चौहत्तर रूपए। और उन्होंने School, Hospital, Library पर खर्च किये दो करोड़ पैंतीस लाख उन्यासी हजार छः सौ चौहत्तर रूपए। उन्होंने एक रुपया भी अपने पास नहीं रखा। दरअसल इसके पीछे भी एक दिलचस्प वाकया है। हुआ यूं कि एक बार भाई जगदीश त्रिवेदी जी ने कहा कि जब 2017 में वो 50 साल के हो जाएंगे तो उसके बाद उनके कार्यक्रमों से होने वाली आय को वो घर नहीं ले जाएंगे बल्कि समाज पर खर्च करेंगे। 2017 के बाद से अब तक, वो लगभग पौने नौ करोड़ रूपए अलग–अलग सामाजिक कार्यों पर खर्च कर चुके हैं। एक हास्य कलाकार, अपनी बातों से, हर किसी को हंसने के लिए मजबूर कर देता है। लेकिन वो भीतर, कितनी संवेदनाओं को जीता है, ये भाई जगदीश त्रिवेदी जी के जीवन से पता चलता है। आपको ये जानकर हैरानी होगी कि उनके पास PhD की तीन डिग्रियां भी हैं। वो 75 किताबें लिख चुके हैं, जिनमें से कई पुस्तकों को सम्मान भी मिला है। उन्हें सामाजिक कार्यों के लिए भी कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। मैं भाई जगदीश त्रिवेदी जी को उनके सामाजिक कार्यों के लिए बहुत–बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

मेरे परिवारजनों, अयोध्या में राम मंदिर को लेकर पूरे देश में उत्साह है, उमंग है। लोग अपनी भावनओं को अलग अलग तरह से व्यक्त कर रहे हैं। आपने देखा होगा, बीते कुछ दिनों में श्री राम और अयोध्या को लेकर कई सारे नए गीत, नए भजन, बनाये गए हैं। ये संकलन, भावों का, भक्ति का, ऐसा प्रवाह बनेगा जिसमें हर कोई राम–मय हो जाएगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज 'मन की बात' में मेरे साथ बस इतना ही। 2024 अब कुछ ही घंटे दूर है। भारत की उपलब्धियां, हर भारतवासी की उपलब्धि है। हमें पंच प्राणों का ध्यान रखते हुए भारत के विकास के लिए निरंतर जुटे रहना है। हम कोई भी काम करें, कोई भी फैसला लें, हमारी सबसे पहली कसौटी यही होनी चाहिए कि इससे देश को क्या मिलेगा, इससे देश का क्या लाभ होगा। राष्ट्र प्रथम – Nation First इससे बड़ा कोई मंत्र नहीं। इसी मंत्र पर चलते हुए हम भारतीय, अपने देश को विकसित बनाएंगे, आत्मनिर्भर बनाएंगे। आप सभी 2024 में सफलताओं की नई ऊंचाई पर पहुंचे, आप सभी स्वस्थ रहें, फिट रहें, खूब आनंद से रहें – मेरी यही प्रार्थना है। 2024 में हम फिर एक बार देश के लोगों की नई उपलब्धियों पर चर्चा करेंगे।

रामोविग्रहवान धर्म : लोकाभिमुख धर्मज्ञ राजा रामचन्द्र जी

कृष्णमुरारी त्रिपाठी अटल

राम पुत्र के रूप में, भाई के रूप में, पति के रूप में, शिष्य के रूप में , आदर्श राजा के रूप में अपने समस्त कर्त्तव्यों के पालनकर्ता के रूप में जन जन के मन में रचे बसे हुए हैं। गुरुभक्ति, मातृभक्ति, पितृभक्ति, प्रजापालन, धर्मपालन, जन्मभूमि मातृभूमि के प्रति अनन्य निष्ठावान प्रजाहितदक्ष राजा श्री रामचन्द्र जी का आदर्श – जीवन के प्रत्येक क्रम में सबको धर्म की राह दिखलाता है। वे नीति धर्म–विधान–संचालन के नियामक हैं।

की राह दिखलाता है। वे नीति धर्म–विधान–संचालन के नियामक हैं।

किसी भी सीमा या विभाजन से भरे घट घट वासी राम सबके हैं और सबमें राम है ; यह बोध वाक्य ही उन्हें सर्वत्र व्याप्त करता है। इसीलिए बाबा गोस्वामी तुलसीदास ने उनकी महिमा का बखान करते हुए कहा है कि –

हरि ब्यापक सर्बत्र समाना ।प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना॥
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं ।कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं॥

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम और उनका जीवनादर्श सम्पूर्ण सृष्टि के सम्यक ढंग से सञ्चालन के लिए अमृत सूत्र हैं। वे भारत की आत्मा के रूप में सतत् अमृत कलश से राष्ट्र की रग रग में प्रवाहित तो हो ही रहे हैं। साथ ही पुण्यता की दैवीय आभा से भी राष्ट्र जीवन का पालन–पोषण कर रहे हैं।

राम पुत्र के रूप में, भाई के रूप में, पति के रूप में, शिष्य के रूप में , आदर्श राजा के रूप में अपने समस्त कर्त्तव्यों के पालनकर्ता के रूप में जन जन के मन में रचे बसे हुए हैं। गुरुभक्ति, मातृभक्ति, पितृभक्ति, प्रजापालन, धर्मपालन, जन्मभूमि मातृभूमि के प्रति अनन्य निष्ठावान प्रजाहितदक्ष राजा श्री रामचन्द्र जी का आदर्श – जीवन के प्रत्येक क्रम में सबको धर्म

प्रभु श्रीराम भारत ही नहीं अपितु अखिल विश्व को 'धर्म राज्य – राम राज्य' का पथ प्रशस्त करते हैं। इहलोक से लेकर परलोक की कामना तक में श्रीराम महिमा सबको एकसूत्रता में बांधे रहती है। उनके अवतरण काल से लेकर उनका सम्पूर्ण जीवन आदर्शों एवं मूल्यों की संस्थापना का काल रहा है।

ठीक इसी भांति उनके द्वारा स्थापित 'राम राज्य' भी राज्य के सञ्चालन का सर्वश्रेष्ठ आदर्श के रूप में सबके मानस में विद्यमान है। एक राजा कैसा होना चाहिए ? राजा या शासनकर्त्ता के प्रजापालन धर्मपालन की नीति कैसी होनी चाहिए ? यदि इन आदर्शों को सीखना है – अनुकरण करना है

तो श्रीरामचन्द्र जी में हम मनुष्यत्व से देवत्व के अनन्त स्वरूप एवं स्त्रोतों का दिग्दर्शन कर सकते हैं।

यद्यपि रामराज्य और मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का सम्पूर्ण वर्णन कर पाना मेरी दृष्टि में असंभव है। फिर भी कुछ उदाहरणों से राम कैसे थे और रामराज्य क्या था ? कैसा था राम राज्य ? वे किस प्रकार से राजा के रूप में आदर्श बने ? उनके राज्य में प्रजा कैसी थी ? यहां सार संक्षेप में महर्षि वाल्मीकि और बाबा गोस्वामी तुलसीदास जी की दृष्टि से जानने समझने का यत्न करेंगे।

वाल्मीकि रामायण के अरण्य काण्ड के 37 वें सर्ग में मारीच – रावण को प्रभु श्री राम के विषय में बताते हुए कहता है कि –

न च पित्रा परित्यक्तो नामर्यादः कथंचन।
न लुब्धो न च दुःशीलो न च क्षत्रियपांसनः।।

अर्थात् कृ 'श्रीरामचन्द्रजी न तो पिता द्वारा त्यागे या निकाले गए हैं, न उन्होंने धर्म की मर्यादा का किसी तरह त्याग किया है, न वे लोभी, न दूषित आचार–विचार वाले और न क्षत्रियकुल–कलङ्क ही हैं॥

उनके स्वभाव की विशिष्टता बतलाने वाला यह प्रसंग भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्श को रेखांकित करता है न च

धर्मगुणहीनः कौसल्यानन्दवर्धनः।
न च तीक्ष्णो हि भूतानां सर्वभूतहिते रतः॥

अर्थात् कृ 'कौसल्या का आनन्द बढ़ाने वाले श्रीराम धर्मसम्बन्धी गुणों से हीन नहीं हुए हैं। उनका स्वभावभी किसी प्राणी के प्रति तीखा नहीं है। वे सदा समस्त प्राणियों के हित में ही तत्पर रहते हैं।

रावण का संहार निकट था इसलिए वह माता सीता के हरण के लिए उन्माद से भरा हुआ था। उस समय मारीच – रावण को राम क्या हैं ? यह यहां पर और अधिक सुस्पष्ट हो जाता है कृ

रामो विग्रहवान् धर्मः साधुः सत्य पराक्रमः।
राजा सर्वस्य लोकस्य देवानाम् इव वासवः॥

अर्थात् कृ श्रीराम धर्म के मूर्तिमान् स्वरूप हैं। वे साधु और सत्यपराक्रमी हैं। जैसे इन्द्र समस्त देवताओं के अधिपति हैं, उसी प्रकार श्रीराम भी सम्पूर्ण जगत् के राजा हैं ।

भगवान राम केवल शस्त्र ही नहीं बल्कि शास्त्र के भी ज्ञाता थे। अतएव वे धर्मानुसार शास्त्र की आज्ञा से राज्य का सञ्चालन करते थे। वेद के विद्वान के रूप में भी उनकी ख्याति थी । जब उनके राज्याभिषेक के समय महाराजा दशरथ ने प्रजा / मन्त्रि परिषद् का अनुमोदन चाहा था, उस समय प्रजा ने यह कहते हुए भी श्रीराम के राज्याभिषेक को स्वीकृति दी थी –

"सम्यग् विद्याव्रतस्नातो – यथावत्– सांगवेदवित"
(वाल्मीकि रामायण)

अर्थात् – श्री राम में अन्य गुण वैशिष्ट्य के साथ साथ सांगोपांग वेद विद्वता भी है।

अयोध्या में उनके राज्य सञ्चालन के लिए अमात्य, मन्त्रि परिषद्, राजपुरोहित, सभा आदि की सुव्यवस्था थी। इन सबके ऊपर नियामक तत्व 'धर्म' था और धर्म – आज्ञा से ही **लोकल्याणकारी** – लोकाभिमुख शासन तंत्र की संरचना थी। भगवान श्री राम को जब राजा के आदर्श के रूप में देखते हैं तो वह आदर्श 'तत्वनिष्ठ–धर्मनिष्ठ' स्वरूप में महनीय रुप में प्रतिष्ठित है।

एक राजा के शासन की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि – उसके राज्य में सर्वत्र प्रसन्नता, सुख समृध्दि, शान्ति, आरोग्य, समन्वय, साहचर्य, आत्मानुशासन , प्राणिमात्र के प्रति कल्याण के भाव विचार और कार्य सर्वत्र दिखाई दें। सभी ओर सौमनस्य प्रेम भाव – धर्मभाव दृष्टिगोचर हो। कहीं भी किसी भी प्रकार की विपत्ति न हो – किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो। सब अपने अपने 'स्वधर्म' का पालन करते हुए जीवन निर्वाह करें।

इन समस्त वैशिष्टयों के अतिरिक्त भी मनुष्य एवं प्राणि मात्र के कल्याण एवं उन्नति के जितने भी प्रयोजन / कार्य हो सकते हैं। वे सभी भगवान श्री राम के राज्य का स्वभाव रहे हैं। इसीलिए 'रामराज्य' मानक राज्य के रूप में जन–जन की चेतना में विद्यमान है।

बाबा गोस्वामी तुलसीदास ने रामराज्य के विषय में लिखा है –

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

अर्थात् – 'रामराज्य' में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं व्यापते (सताते) हैं। सभी मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में बताई हुई नीति (मर्यादा) के अनुसार अपने–अपने धर्म का पालन करते हैं।

इसी प्रकार राम राज्य में सर्वत्र 'धर्म' ही दृष्टव्य होता है। अभिप्रायतः धर्म ही नियामक तत्व बनकर सभी में विद्यमान हो चुका है।

चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं॥
राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी॥

अर्थात् कृ धर्म अपने चारों चरणों (सत्य, शौच, दया और दान) से जगत में परिपूर्ण हो रहा है, स्वप्न में भी कहीं पाप नहीं है। पुरुष और स्त्री सभी रामभक्ति के परायण हैं और सभी परम गति (मोक्ष) के अधिकारी हैं।

इसी प्रकार उनके शासन में 'अकाल मृत्यु ' कभी नहीं होती। प्रत्येक व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण आयु पूरी करने के पश्चात ही मृत्यु को प्राप्त करता है।

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।।

अर्थात् – अल्पायु में मृत्यु नहीं होती, न किसी को कोई पीड़ा होती है। सभी के शरीर सुंदर और निरोग हैं। न कोई दरिद्र है, न दुःखी है और न दीन ही है। न कोई मूर्ख है और न शुभ लक्षणों से हीन ही है।

प्रभु श्री राम की प्राण-प्रतिष्ठा

सियावर रामचंद्र की जय ! मेरे प्यारे देशवासियों, राम राम!

जीवन के कुछ क्षण, ईश्वरीय आशीर्वाद की वजह से ही यथार्थ में बदलते हैं।

आज हम सभी भारतीयों के लिए, दुनिया भर में फैले रामभक्तों के लिए ऐसा ही पवित्र अवसर है। हर तरफ प्रभु श्रीराम की भक्ति का अद्भुत वातावरण! चारों दिशाओं में राम नाम की धुन, राम भजनों की अद्भुत सौन्दर्य माधुरी! हर किसी को इंतजार है 22 जनवरी का, उस ऐतिहासिक पवित्र पल का। और अब अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा में केवल 11 दिन ही बचे हैं। मेरा सौभाग्य है कि मुझे भी इस पुण्य अवसर का साक्षी बनने का अवसर मिल रहा है। ये मेरे लिए कल्पनातीत अनुभूतियों का समय है।

मैं भावुक हूँ,भाव–विह्वल हूँ! मैं पहली बार जीवन में इस तरह के मनोभाव से गुजर रहा हूँ, मैं एक अलग ही भाव–भक्ति की अनुभूति कर रहा हूं। मेरे अंतर्मन की ये भाव–यात्रा, मेरे लिए अभिव्यक्ति का नहीं, अनुभूति का अवसर है। चाहते हुए भी मैं इसकी गहनता, व्यापकता और तीव्रता को शब्दों में बांध नहीं पा रहा हूं। आप भी मेरी स्थिति भली भाँति समझ सकते हैं।

जिस स्वप्न को अनेकों पीढ़ियों ने वर्षों तक एक संकल्प की तरह अपने हृदय में जिया, मुझे उसकी सिद्धि के समय उपस्थित होने का सौभाग्य मिला है। प्रभु ने मुझे सभी भारतवासियों का प्रतिनिधित्व करने का निमित्त बनाया है।

'मोदी का संदेश'

"निमित्त मात्रम् भव सव्य–साचिन"।

ये एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। जैसा हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है, हमें ईश्वर के यज्ञ के लिए,आराधना के लिए, स्वयं में भी दैवीय चेतना जाग्रत करनी होती है। इसके लिए शास्त्रों में व्रत और कठोर नियम बताए गए हैं, जिन्हें प्राण प्रतिष्ठा से पहले पालन करना होता है। इसलिए, आध्यात्मिक यात्रा की कुछ तपस्वी आत्माओं और महापुरुषों से मुझे जो मार्गदर्शन मिला है...उन्होंने जो यम–नियम सुझाए हैं, उसके अनुसार मैं आज से 11 दिन का विशेष अनुष्ठान आरंभ कर रहा हूं।

इस पवित्र अवसर पर मैं परमात्मा के श्रीचरणों में प्रार्थना करता हूं... ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों का पुण्य स्मरण करता हूं...और जनता–जनार्दन, जो ईश्वर का रूप है, उनसे प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे आशीर्वाद दें...ताकि मन से, वचन से, कर्म से, मेरी तरफ से कोई कमी ना रहे।

मेरा ये सौभाग्य है कि 11 दिन के अपने अनुष्ठान का आरंभ, मैं नासिक धाम–पंचवटी से कर रहा हूं। पंचवटी, वो पावन धरा है, जहां प्रभु श्रीराम ने काफी समय बिताया था।

और आज मेरे लिए एक सुखद संयोग ये भी है कि आज स्वामी विवेकानंदजी की जन्मजयंती है। ये स्वामी विवेकानंदजी ही थे जिन्होंने हजारों वर्षों से आक्रांतित भारत की आत्मा को झकझोरा था। आज वही आत्मविश्वास, भव्य राम मंदिर के रूप में हमारी पहचान बनकर सबके सामने है।

और सोने पर सुहागा देखिए, आज माता जीजाबाई जी की जन्म जयंती है। माता जीजाबाई, जिन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज के रूप में एक महा मानव को जन्म दिया था। आज हम अपने भारत को जिस अक्षुण्ण रूप में देख रहे हैं, इसमें माता जीजाबाई जी का बहुत बड़ा योगदान है ।

और साथियों, जब मैं माता जीजाबाई का पुण्य स्मरण कर रहा हूं तो सहज रूप से मुझे अपनी मां की याद आना बहुत स्वाभाविक है। मेरी मां जीवन के अंत तक माला जपते हुए सीता–राम का ही नाम भजा करती थीं।

प्राण प्रतिष्ठा की मंगल–घड़ी... चराचर सृष्टि का वो चैतन्य पल... आध्यात्मिक अनुभूति का वो अवसर... गर्भगृह में उस पल क्या कुछ नहीं होगा... !!!

शरीर के रूप में, तो मैं उस पवित्र पल का साक्षी बनूंगा ही, लेकिन मेरे मन में, मेरे हृदय के हर स्पंदन में, 140 करोड़ भारतीय मेरे साथ होंगे। आप मेरे साथ होंगे...हर रामभक्त मेरे साथ होगा। और वो चैतन्य पल, हम सबकी सांझी अनुभूति होगी। मैं अपने साथ राम मंदिर के लिए अपने जीवन को समर्पित करने वाले अनगिनत व्यक्तित्वों की प्रेरणा लेकर जाउंगा।

त्याग–तपस्या की वो मूर्तियां... 500 साल का धैर्य... दीर्घ धैर्य का वो काल... अनगिनत त्याग और तपस्या की घटनाएं... दानियों की... बलिदानियों की...गाथाएं...

कितने ही लोग हैं जिनके नाम तक कोई नहीं जानता, लेकिन जिनके जीवन का एकमात्र ध्येय रहा है, भव्य राम मंदिर का निर्माण। ऐसे असंख्य लोगों की स्मृतियां मेरे साथ होंगी।

जब 140 करोड़ देशवासी, उस पल में मन से मेरे साथ जुड़ जाएंगे, और जब मैं आपकी ऊर्जा को साथ लेकर गर्भगृह में प्रवेश करूंगा, तो मुझे भी ऐहसास होगा कि मैं अकेला नहीं, आप सब भी मेरे साथ हैं।

ये 11 दिन व्यक्तिगत रूप से मेरे यम नियम तो है ही लेकिन मेरे भाव विश्व में आप सब समाहित है द्य मेरी प्रार्थना है कि आप भी मन से मेरे साथ जुड़े रहें।

रामलला के चरणों में, मैं आप के भावों को भी उसी भाव से अर्पित करूंगा जो भाव मेरे भीतर उमड़ रहे हैं। **भारत माता की जय**

श्रद्धांजलि

स्व0 हृदयनाथ सिंह का निधन संगठन की अपूर्णीय क्षति

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, ब्रजेश पाठक प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं भारतीय जनता पार्टी के पूर्व क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री हृदयनाथ सिंह जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी के प्रतिनिधि के रूप में राष्ट्रीय महामंत्री अरूण सिंह और राष्ट्रीय सह महामंत्री (संगठन) शिव प्रकाश जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं भारतीय जनता पार्टी के पूर्व क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री हृदयनाथ सिंह जी के जौनपुर स्थित पैतृक आवास पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की । प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य व ब्रजेश पाठक ने भाजपा प्रदेश मुख्यालय पर भारतीय जनता पार्टी के पूर्व क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री हृदयनाथ सिंह जी के पार्थिव देह पर भाजपा का ध्वज ओढाकर पुष्पांजलि अर्पित की। पार्टी मुख्यालय पर केंद्रीय राज्य मंत्री कौशल किशोर, प्रदेश सरकार के मंत्री सूर्य प्रताप शाही, सुरेश खन्ना, धर्मपाल सिंह, जयवीर सिंह, जेपीएस राठौर, दयाशंकर सिंह, प्रदेश उपाध्यक्ष ब्रज बहादुर जी, प्रदेश मंत्री त्रयंबक त्रिपाठी, अभिजात मिश्र, मुख्यालय प्रभारी भारत दीक्षित, सह प्रभारी लक्ष्मण चौधरी, मीडिया प्रभारी मनीष दीक्षित, पूर्व मंत्री डॉ महेंद्र सिंह, पूर्व एमएलसी जय प्रकाश चतुर्वेदी, विंध्यवासिनी कुमार, महापौर सुषमा खड़कवाल सहित बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने श्री हृदय नाथ सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने श्री हृदय नाथ सिंह जी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक, भारतीय जनता पार्टी के पूर्व क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री हृदयनाथ सिंह जी का निधन अत्यंत पीडादायक है। मेरी संवेदना शोकाकुल परिजनों के साथ है। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि देश व समाज की सेवा में सतत समर्पित रहे, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं भाजपा के पूर्व क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री हृदयनाथ सिंह जी का निधन अत्यंत दुःखद है। प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान तथा शोकाकुल स्वयंसेवकों व परिजनों को यह अथाह दुःख सहने की शक्ति दें। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा वरिष्ठ प्रचारक एवं पूर्व संगठन मंत्री श्री हृदयनाथ सिंह जी के निधन का समाचार सुनकर स्तब्ध हूं। मेरी संवेदनाएं शोकाकुल परिजनों के साथ है। ईश्वर दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें तथा शोक संतप्त परिजनों को विपदा की इस घड़ी में संबल प्रदान करे। प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक, भारतीय जनता पार्टी के पूर्व क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री हृदयनाथ सिंह जी के निधन की सूचना अत्यंत दुःखद है। उन्होंने ईश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने तथा शोक संतृप्त परिजनों व समर्थको को इस असीम दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

“प्रोजेक्ट अलंकार”
के अंतर्गत माध्यमिक विद्यालयों में
जीर्णोद्धार, मरम्मत, पुनर्निर्माण एवं अवस्थापना सुविधाओं के विकास हेतु
347 करोड़ रुपए की धनराशि का प्रेषण
श्री धर्मेन्द्र प्रधान

विकसित भारत संकल्प यात्रा
विकास परियोजनाओं का शिलान्यास/लोकार्पण
एवं जनसभा

भारतीय जनता पार्टी, उ0प्र0
संयुक्त मोर्चा
बैठक

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोडः UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2022-23
जनवरी प्रथम 2023 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।